हिंदी विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : 15 -21 February 2026

महाशिवरात्रि

तप, विश्वास व प्राप्ति का पर्व

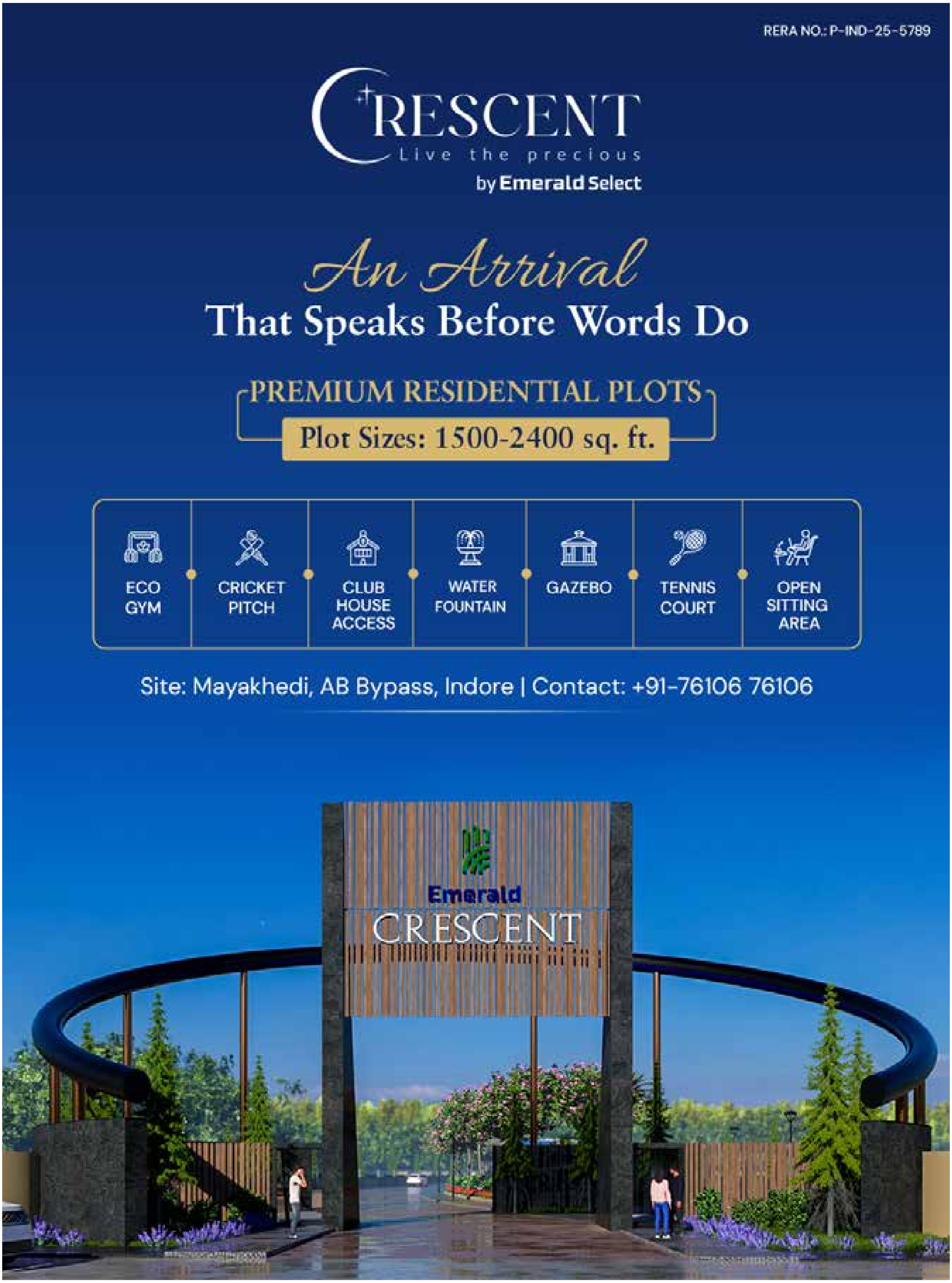
RERA NO.: P-IND-25-5789
CRESCENT
Live the precious
by Emerald Select
An Arrival
That Speaks Before Words Do
PREMIUM RESIDENTIAL PLOTS
Plot Sizes: 1500-2400 sq. ft.
ECO GYM
CRICKET PITCH
CLUB HOUSE ACCESS
WATER FOUNTAIN
GAZEBO
TENNIS COURT
OPEN SITTING AREA
Site: Mayakhedi, AB Bypass, Indore | Contact: +91-76106 76106
Emerald
CRESCENT

अनुक्रमणिका

महाशिवरात्रि विज्ञान व संस्कृति का संगम	डॉ. सौरभ मालवीय	04
शिव व शक्ति का महामिलन	पूर्णिमा ढिल्लन	06
शिवलिंग की अधूरी परिक्रमा का रहस्य	पूनम नेगी	08
पुरुब नगरिया से आए सिउ जोगिया	संकलन	11
समाज संगठित और गुणवान बनेगा तभी देश में परिवर्तन होगा - डॉ. मोहन भागवत जी	स्निग्धा अवतंस	12
पाकिस्तान फिर हुआ पस्त	प्रवीण सिन्हा	14
भारत की लम्बी छलांग	डॉ. शुभ्रता मिश्रा	16
वैश्विक परिदृश्य में भारत का डिजिटल मॉडल	प्रज्ञा गौतम	18
बजेगा भारत का डंका	रंजीत कुमार	20
राहुल गांधी की फिसलती जुबान	सुभाष चंद्र	22
मदरसा बोर्ड पर लगा लगाम	डॉ. राकेश भट्ट	25
क्रिप्टोकरेंसी की बढ़ती लोकप्रियता	सतीश सिंह	26
यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं, अराजकता है	विनोद अनुपम	27
एक थीं वकील साहिबा	डॉ. अशोक व्यास	28
समाचार	हिंदी विवेक	29

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

पंजीयन शुल्क

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये

पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 20,000 रुपये

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067 फोन नं. : 022-28675299, 022-28678933

डॉ. सौरभ मालवीय

पर्व एवं त्यौहार भारतीय संस्कृति की पहचान हैं। यह भारतीय संस्कृति के संवाहक भी हैं। इनके माध्यम से ही हमें अपनी गौरवशाली प्राचीन संस्कृति के सम्बंध में जानकारी प्राप्त होती है।

महाशिवरात्रि विज्ञान व संस्कृति का संगम

शिवरात्रि प्रत्येक मास की अमावस्या से एक दिन पूर्व अर्थात कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मनाई जाती है, जबकि महाशिवरात्रि वर्ष में एक बार आती है। यह फाल्गुन मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मनाई जाती है। शिव पुराण की ईशान संहिता में कहा गया है कि फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि में भगवान शिव करोड़ों सूर्यों के समान प्रभाव वाले लिंग रूप में प्रकट हुए थे-

फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यामादिदेवो महानिशि।
शिवलिंगतयोद्भूतः कोटिसूर्यसमप्रभः।।

माना जाता है कि इसी दिन प्रलय आएगा, जब प्रदोष के समय भगवान शिव तांडव करते हुए ब्रह्मांड को तृतीय नेत्र की ज्वाला से नष्ट कर देंगे। इसीलिए शिवरात्रि को कालरात्रि भी कहा जाता है।

महाशिवरात्रि धार्मिक एवं सांस्कृतिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है। महाशिवरात्रि के संदर्भ में अनेक पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं। एक कथा के अनुसार अग्निलिंग के उदय के साथ इसी दिन सृष्टि प्रारम्भ हुई थी। एक पौराणिक कथा के अनुसार फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी

पर भगवान शिव सर्वप्रथम शिवलिंग के स्वरूप में प्रकट हुए थे। इसीलिए इस दिवस को भगवान शिव के ज्योतिर्लिंग के प्रकाट्य पर्व को प्रत्येक वर्ष महाशिवरात्रि के रूप में मनाया जाता है।

एक अन्य कथा के अनुसार इस दिन भगवान शिव का देवी पार्वती के साथ विवाह सम्पन्न हुआ था, यह उनके विवाह की रात्रि है। उन्होंने वैराग्य त्याग कर गृहस्थ जीवन अपना लिया था। एक पौराणिक कथा के अनुसार इस दिन भगवान शिव ने समुद्र मंथन के समय निकले कालकूट नामक विष को अपने कंठ में रख लिया था, इससे उनका कंठ नीला हो गया था। इसीलिए उन्हें नीलकंठ नाम से भी जाना जाता है। कहा जाता है कि इस घातक विष के कारण भगवान शिव को ताप चढ़ गया था। इसे उतारने के लिए उनके मस्तक पर बेलपत्र रखा गया क्योंकि बेलपत्र शीतल गुण वाला होता है। इससे उन्हें संतुष्टि प्राप्त हुई। तभी से शिवलिंग पर बेल पत्र चढ़ाने की परम्परा आरम्भ हुई। एक कथा के अनुसार इस रात्रि भगवान शिव ने संरक्षण एवं विनाश के नृत्य का सृजन किया था। इसलिए भी यह रात्रि विशेष है।

महाशिवरात्रि का वैज्ञानिक दृष्टि से अत्यंत महत्व है। माना जाता है कि इस रात्रि ग्रह का उत्तरी गोलार्द्ध इस प्रकार अवस्थित होता है कि मानव की आंतरिक ऊर्जा प्राकृतिक रूप से ऊपर की ओर जाती है। मान्यता है कि यह ऊर्जा मनुष्य को आध्यात्मिक शिखर तक ले जाने में सहायक सिद्ध होती है। इसलिए इस रात्रि में भगवान शिव की पूजा-अर्चना करने का अत्यंत महत्व है। पूजा के समय भक्त सीधा बैठता है तथा उसकी रीढ़ की हड्डी सीधी होती है। इसके कारण उसकी ऊर्जा उसके मस्तिष्क की ओर जाती है। इससे उसे शारीरिक ही नहीं अपितु मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्ति भी प्राप्त होती है। भगवान शिव का पंचाक्षरी मंत्र ॐ नमः शिवाय है। यह मंत्र भगवान शिव को अत्यंत प्रिय है। इस मंत्र का सम्बंध पंच महाभूतों भूमि, गगन, वायु अग्नि एवं नीर से माना जाता है। इस मंत्र का निरंतर जाप करने से शरीर में ऊर्जा का संचार होता है। इससे मनुष्य का आत्मबल बढ़ता है।

धर्म ग्रंथों के अनुसार महाशिवरात्रि के दिन भगवान शिव की पूजा- अर्चना करने से वे प्रसन्न होकर अपने भक्तों को मनचाहा वरदान देते हैं। शिवरात्रि का महोत्सव एक दिवस पूर्व ही प्रारम्भ हो जाता है। भगवान शिव के मंदिरों में रात्रि भर पूजा-अर्चना की जाती है। भक्त रात्रिभर जागरण करते हैं एवं सूर्योदय के समय पवित्र स्थलों पर स्नान करते हैं। नदी तटों विशेषकर गंगा के तटों पर भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ती है। स्नान के पश्चात भगवान शिव के मंदिरों में पूजा-अर्चना की जाती है। इस दिन मुक्तिदायिनी गंगा के जल का भी विशेष महत्व है क्योंकि गंगा देवलोक से सीधी भगवान शिव की जटा पर ही उतरी थीं। इसके पश्चात ही वह पृथ्वी लोक में उतरी एवं प्रवाहित हुई। इसलिए सभी नदियों में गंगा का स्थान सर्वोपरि माना जाता है। कई स्थानों पर भगवान शिव की बारात भी निकाली जाती है। इसमें कलाकार शिव एवं पार्वती का रूप धारण करते हैं। बारात में सम्मलित लोग शरीर पर भस्म लगाए हुए होते हैं। वे नाचते-गाते हुए शिव एवं पार्वती के रथ के पीछे चल रहे होते हैं। भक्तजन इसमें भाग लेते हैं।

महाशिवरात्रि का महिलाओं के लिए विशेष महत्व है। विवाहित महिलाएं व्रत रखकर अपने पति की दीर्घायु एवं सुखी जीवन के लिए प्रार्थना करती हैं, जबकि अविवाहित युवतियां भगवान शिव से अपने लिए सुयोग्य वर मांगती हैं।

भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंग

महाशिवरात्रि पर ज्योतिर्लिंग पर विशेष पूजा-अर्चना की जाती है। भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंग हैं अर्थात प्रकाश के लिंग हैं। ये स्वयम्भू के रूप में जाने जाते हैं, जिसका अर्थ है स्वयं उत्पन्न। ये बारह स्थानों पर ज्योतिर्लिंग स्थापित हैं। इनमें उत्तराखंड में हिमालय का दुर्गम केदारनाथ ज्योतिर्लिंग, उत्तर प्रदेश के ही काशी विश्वनाथ मंदिर में स्थापित विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग, बिहार के बैद्यनाथ धाम में स्थापित शिवलिंग, गुजरात के काठियावाड़ में स्थापित सोमनाथ शिवलिंग, मध्य प्रदेश के उज्जैन के अवंति नगर में स्थापित महाकालेश्वर शिवलिंग, मध्य प्रदेश के ही ओंकारेश्वर में नर्मदा तट पर स्थापित ममलेश्वर ज्योतिर्लिंग, गुजरात के द्वारकाधाम के निकट स्थापित नागेश्वर ज्योतिर्लिंग, महाराष्ट्र की भीमा नदी के किनारे स्थापित भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग, महाराष्ट्र के नासिक के समीप त्र्यंम्बकेश्वर में स्थापित ज्योतिर्लिंग, महाराष्ट्र के ही औरंगाबाद जिले में एलोरा गुफा के समीप वेसल गांव में स्थापित घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग, चेन्नई में कृष्णा नदी के किनारे पर्वत पर स्थापित श्री शैल मल्लिकार्जुन शिवलिंग एवं चेन्नई में ही रामेश्वरम् त्रिचनापल्ली समुद्र तट पर भगवान श्रीराम द्वारा स्थापित रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग सम्मिलित हैं। भगवान शिव मोक्षदायिनी माने जाते हैं। इसलिए यह त्यौहार भी मनुष्य को पुण्य कर्मों के माध्यम से मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रेरित करता है।

●●●

पूर्णिमा ढिल्लन

भगवान के जन्म का उत्सव तो मनाते हैं, लेकिन महाशिवरात्रि के अवसर पर शिव के विवाह का उत्सव क्यों मनाया जाता है? इसके प्रामाणिक तथ्य क्या हैं, इस आलेख में स्पष्ट किया गया है।

शिव व शक्ति का महामिलन

फाल्गुन मास की कृष्ण चतुर्दशी महाशिवरात्रि एक ऐसा पर्व है, जो अन्य सभी देवों के जन्मोत्सवों से भिन्न है। हम अधिकांश देवताओं के जन्मोत्सव जैसे- रामनवमी, जन्माष्टमी व गणेश चतुर्थी मनाते हैं, पर महाशिवरात्रि के पर्व को भगवान शिव के अवतरण दिवस के साथ-साथ शिव पार्वती के विवाहोत्सव के रूप में भी मनाया जाता है। क्या महाशिवरात्रि भगवान शिव के जन्म का उत्सव है? इस प्रश्न के गर्भ में भारतीय दर्शन का सबसे गहरा सत्य छुपा है क्योंकि शिव अजन्में हैं, जन्म और मृत्यु की सीमाओं से परे हैं, वह आदि भी हैं और अनंत भी। इसलिए महाशिवरात्रि केवल एक धार्मिक तिथि नहीं बल्कि गहन आध्यात्मिक चेतना है।

शास्त्रों और वेदों के प्रामाणिक तथ्यों के अनुसार शिव देहधारी अवतार नहीं बल्कि वह ब्रह्म है, जिसका ना आदि है ना अंत है। वह स्वयंभू हैं। श्रीराम, श्रीकृष्ण को विष्णु के मानव अवतार का रूप माना जाता है जिन्होंने गर्भ से जन्म लिया, लेकिन शिव तो महाशून्य हैं, जिसमें से समय

(काल) का जन्म होता है। शिवपुराण (विद्येश्वर संहिता) के अनुसार महाशिवरात्रि वह रात है जब निराकार शिव एक विशाल ज्योतिर्लिंग के रूप में प्रकट हुए थे। इसलिए हम उनकी जन्म की तिथि नहीं मना सकते बल्कि उस रात का उत्सव मनाते हैं- जब वह लोककल्याण के लिए साकार हुए थे। महाशिवरात्रि वह ऐतिहासिक क्षण है जब महादेव ने मां पार्वती के प्रेम और तप को स्वीकार किया।

प्रामाणिक तथ्य: शिवपुराण की रुद्र संहिता में इस बात का वर्णन किया गया है कि मां पार्वती ने हजारों वर्षों तक केवल बेलपत्र और अंततः वायु पर जीवित रहकर तपस्या कीं। शिव-पार्वती का विवाह सृष्टि के संतुलन का महामिलन है, यह दो पात्रों का मिलन नहीं बल्कि पुरुष (चेतना) और प्रकृति (ऊर्जा) का एकीकरण है। यह विवाह एक चेतना, ऊर्जा और संतुलन का सृष्टि के साथ विवाह है। यह विवाह एक संयोग है और सृष्टि का आरम्भ है।

शिव परम योगी हैं। वह शमशान की भस्म मलकर शून्य में लीन रहने वाले अघोरी हैं। यदि शिव केवल वैराग्य में रहते तो सृष्टि का विस्तार कैसे होता? मां पार्वती के कठोर तप ने महादेव के मौन को तोड़ा।

शिव विवाह का वर्णन शिव पुराण, स्कंद पुराण और कालिदास के लोकगीतों और लोककथाओं में भी मिलता है, जो प्रमाणित करता है कि पार्वती के तप और शिव के वैराग्य ने ही अंततः दोनों का दिव्य मिलन करवाया। यह हमेशा सिखाता है कि ग्रहस्थ जीवन और आध्यात्मिकता अलग-अलग नहीं है।

गठबंधन की रस्म: महाशिवरात्रि के दिन महिलाएं शिव-पार्वती की छोटी सी मिट्टी या धातु की मूर्ति का गठबंधन करती हैं, इस दृश्य को देख मन श्रद्धा से भर उठता है, इन परम्पराओं में गहरे सांस्कृतिक संदेश छिपे होते हैं। यह रेशमी धागा केवल वस्त्रों को ही नहीं जोड़ता बल्कि पति-पत्नी के रिश्तों को प्रेम के मजबूत गठबंधन में बांधकर रखता है, इसके कई महत्वपूर्ण कारण हैं।

अर्धनारीश्वर भाव का सम्मान: शिव-पार्वती का रिश्ता दुनिया का एकमात्र ऐसा रिश्ता है, जहां दोनों एक-दूसरे में विलीन हैं, यह इस बात का प्रतीक है कि दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।

अखंड सौभाग्य की कामना: महिलाएं इस गठबंधन को सौभाग्य का प्रतीक मानती हैं और अपने वैवाहिक जीवन में प्रेम, स्थिरता समानता, सम्मान और सहयोग के रूप में देखती हैं क्योंकि भारतीय समाज में शिव-पार्वती को आदर्श दाम्पत्य के रूप में देखा जाता है। अतः इस गठबंधन के सूत्र के माध्यम से वह उस ऊर्जा को अपने जीवन में आमंत्रित करती हैं जो कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी परिवार को जोड़कर रख सके।

दाम्पत्य शक्ति और चेतना का संतुलन है: स्त्री स्वयं शक्ति है जब वह शिव-पार्वती का गठबंधन करती है, तब अपने भीतर के धैर्य, साहस और आध्यात्मिक ऊर्जा को जाग्रत करती है। यह विवाह उत्सव उसे याद दिलाता है कि वह केवल गृहस्थी की धुरी नहीं बल्कि शक्ति का स्रोत है।

तप और धैर्य की जीत: यह गठबंधन मां पार्वती के उस अटूट धैर्य की जीत का उत्सव है, जिसने महाकाल को भी एक सूत्र में बांध लिया। महिलाएं भी इस गठबंधन को अटूट प्रेम, विश्वास, धैर्य, समर्पण और आत्मबल के प्रतीक के रूप में देखती हैं।

शिव ही सत्य है, शिव ही सुंदर है, शिव ही संसार का आधार हैं, शिव में बसा यह संसार है। अतः महाशिवरात्रि केवल एक रात नहीं, यह वह क्षण है जब हम अपने भीतर के शिव को पहचानते हैं और अपने भीतर की शक्ति पार्वती से उसका मिलन करवाते हैं। इन दोनों का मिलन दर्शाता है कि चेतना (शिव) ऊर्जा (शक्ति)अलग नहीं है। बिना शक्ति के शिव निष्क्रिय है और बिना शिव के शक्ति दिशाहीन।

शिव का विवाह हमें संदेश देता है कि संसार से भागना धर्म नहीं है, पर इस संसार में रहते हुए प्रेम के बंधन में बंधकर अलिप्त रहना ही असली शिवत्व है। महाशिवरात्र को शिवालय जाकर महादेव से अपनी श्रद्धा का गठबंधन करें, अपने भीतर के उस मौन को जगाएं और शिव के साथ एकाकार होकर शिवत्व को धारण करें और महाशिवरात्रि की इस अलौकिक रात की ऊर्जा को अपने जीवन में समाहित करें। ●●●

शिवलिंग की अधूरी परिक्रमा का रहस्य

महाशिवरात्रि

पूनम नेगी

पूजा के दौरान किसी मंदिर या वृक्ष की हम पूरी परिक्रमा करते हैं, लेकिन मंदिर में शिवलिंग की परिक्रमा अधूरी करते हैं, इसके पीछे का वैज्ञानिक व धार्मिक कारण और रहस्य क्या है, इस आलेख में विस्तार से बताया गया है।

'महाशिवरात्रि' अर्थात देवाधिदेव महादेव शिव की महानतम रात्रि। शिवमहापुराण के अनुसार इसी शुभ तिथि पर महादेव शिव ने सर्वप्रथम ज्योतिर्लिंग के रूप में प्रकट हुए थे। इसी पावन पर्व पर देवाधिदेव महादेव और जगत जननी मां पार्वती का मंगल परिणय भी हुआ था और आदियुग में इसी रात्रि को भगवान शिव ने सर्वप्रथम तांडव नृत्य किया था। फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को मनाया जाने वाला महाशिवरात्रि का महापर्व भगवान शिव की इसी विराट दिव्यता के अर्चन-वंदन का महामहोत्सव है।

हिंदू धर्म में भगवान शिव को देवाधिदेव अर्थात सर्वोच्च देवता माना जाता है। रुद्र रूप में उनकी महिमा वेदों और पुराणों में भी वर्णित है। हिंदू धर्म में अनेक देवी-देवता हैं, किंतु जलाभिषेक केवल शिवलिंग का ही किया जाता है। शास्त्रीय कथानक है कि समुद्र मंथन के दौरान निकले हलाहल अर्थात कालकूट विष पीने के कारण शिवजी के शरीर में गर्मी बढ़ गई थी और उनका मस्तक बहुत गर्म हो गया था तब उस ताप को कम करने के लिए ही गंगाजल से उनका अभिषेक किया गया था तभी से प्रतीक रूप में शिवलिंग पर जल चढ़ाने की परम्परा का शुभारम्भ माना जाता है। अमरनाथ में बर्फ का जो शिवलिंग निर्मित होता है वह एक-एक बूंद जल टपकने के कारण ही निर्मित होता है। शिवजी के मस्तक पर सुशोभित गंगा और चंद्र उनके जलतत्व से विशेष लगाव को ही दर्शाते हैं। ज्ञात हो कि मंदिरों में शिवलिंग के ऊपर छिद्रयुक्त कलश स्थापित करके दिनभर बूंद-बूंद पानी गिराया जाता है जिसे वसोधारा कहा जाता है। शिव महापुराण में वर्णन है कि जो व्यक्ति घड़े की तली में छेद करके उसमें जल भरकर के शिवलिंग के ऊपर वसोधारा अर्थात बूंद-बूंद पानी की धार से उनका अभिषेक करते हैं, उन्हें भौतिक जीवन में सभी प्रकार की सुख-समृद्धि मिलती है और मृत्यु उपरांत मोक्ष को प्राप्त होता है।

शिवलिंग का वैज्ञानिक रहस्य

शिवलिंग को लेकर प्रचलित धारणा है कि यह 'न्यूक्लियर रिएक्टर' के समान है। तर्क दिया जाता है कि शिवलिंग और भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र के रिएक्टर दोनों का आकार बेलनाकार है। शिवलिंग पर जल और बेलपत्र-धतूरे जैसे चढ़ावे चढ़ाने को परमाणु रिएक्टर को ठंडा रखने और रेडियोधर्मी ऊर्जा को अवशोषित करने से जोड़कर देखा जाता है। वास्तव में हमारा पुरातन भारतीय ज्ञान विज्ञान अत्यंत उच्च कोटि

का था। हमारे वैज्ञानिक ऋषियों ने अपनी शोधों के द्वारा यह प्रतिपादित किया था कि शिवलिंग और कुछ नहीं बल्कि ऊर्जा के अक्षय केंद्र हैं। विदित हो कि हमारे केंद्रीय परमाणु शोध संस्थान की संरचना भी शिवलिंग सरीखी ही है। हमारे ऋषि-मुनियों ने शिवलिंग पर जल चढ़ाने की परम्परा इसलिए डाली थी ताकि उससे उत्सर्जित होने वाली ऊर्जा तरंगें शांत रहें। जल और दूध के साथ शिवलिंग पर अर्पित किए जाने वाले बेलपत्र, बेर, आक, भांग व धतूरा आदि पदार्थ भी परमाणु ऊर्जा सोखने वाले पदार्थ होते हैं। इनके अर्पण से शिवलिंग पर चढ़ा जल भी रेडियो एक्टिव हो जाता है। बताते चलें कि शिवपूजा में विशेष रूप से तीन पत्तियों वाले अखंडित बेलपत्र अर्पित करने की परम्परा है। शास्त्रों में कहा गया है कि है बेलपत्र की तीन पत्तियां भगवान शंकर के तीन नेत्रों का प्रतीक हैं। साथ ही इसे त्रिदेव- ब्रह्मा, विष्णु और महेश का प्रतीक भी माना जाता है। मान्यता है कि बेलपत्र चढ़ाने से तीन जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं।

शिवलिंग की अर्द्ध परिक्रमा का रहस्य

ज्ञातव्य हो कि शिवलिंग की पूरी परिक्रमा नहीं की जाती है। जिस जल निकासी नलिका से चढ़ाया गया जल निष्कासित होता है, उसको लांघा नहीं जाता है क्यूंकि वह जल आवेशित (चार्ज) होता है। शिवलिंग पर चढ़ाया हुआ जल नदी के बहते हुए जल के साथ मिलकर औषधि का रूप ले लेता है। इसी कारण उस जल निकासी मार्ग को लांघा नहीं जाता और उसी स्थान वापस घूम कर अर्द्ध परिक्रमा की जाती है। सम्भवतः इसीलिए हमारे बुजुर्ग कहा करते थे कि महादेव शिव शंकर यदि नाराज हो जाएंगे तो प्रलय आ जाएगी। जरा गहराई से विचार कीजिए कि हमारी परम्पराओं के पीछे कितना गहन विज्ञान छिपा हुआ है। वहीं, यदि जल चढ़ाने के रहस्य को समझा जाए तो पहले शिवालय खुले स्थानों पर बने रहते थे। यदि इसके रहस्य पर जाएं तो शिवलिंग पर जल चढ़ाने से पानी शिवलिंग से बहता हुआ जमीन तक जाएगा। ऐसा लगातार होते रहने से उस स्थान का जलस्तर अच्छा बना रहेगा। प्रकारांतर से विचार करें तो पाएंगे कि यह प्रकिया वर्षा जल संचयन का ही एक स्वरूप है।

सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति एवं संहार के अधिपति शिव के स्वरूप में बहुत कुछ ऐसा है जो व्यक्ति को गहरी सीख और सम्बल देने वाला है। उनके व्यक्तित्व में सृष्टि की सारी विशेषताएं और जटिलताएं समाहित हैं। इसीलिए आधुनिक दुनिया की चकाचौंध में भी हम भगवान शिव से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को सफल और सार्थक बना सकते हैं। ●●●

स्वयं के लिए और अपने परिजनों के लिए ग्रंथ का पंजीयन करें

इस ग्रंथ में आप पढ़ेंगे

- संघ में हो रहे अनगिनत सेवा कार्यों का परिणाम क्या है?
- डॉ. हेडगेवार जी से लेकर डॉ. मोहन भागवत जी तक के सभी सरसंघचालकों का दिशादर्शन...
- राजनीति को केंद्र में न रखकर राष्ट्रीयत्व को क्यों केंद्र में रखा?
- भारत के सम्मुख चुनौतियां और संघ कार्य का प्रभाव
- संघ विचारधारा और परिवर्तन

जैसे विविध मौलिक विषय

ग्रंथ का मूल्य ₹700/-

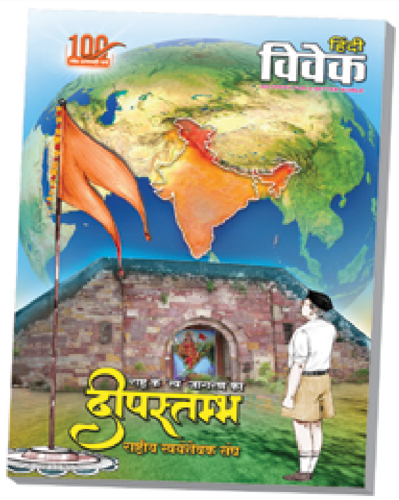

ईमेल – hindivivekvargani@gmail.com

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, Branch - Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483
भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

50+ YEARS OF MOMENTUM
अर्थ सहकारेण कल्याणम्
दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक
सोने तारण कर्ज
जलद कर्ज
कमी प्रक्रिया शुल्क
व्याजदर
९.५०%* वार्षिक
* अटी व शर्ती लागू
TOLL FREE: 1800 233 1919
kalyanjanata.in
KJSBank

महाशिवरात्रि के पर्व पर भगवान शिव के विवाह का उत्सव मनाया जाता है। इस अवसर पर विभिन्न शिव मंदिरों में शिव-पार्वती के विवाह के पारम्परिक गीत भी गाए जाते हैं जो क्षेत्रीय भाषा में भी होते हैं जैसे भोजपुरी, मगही, अवधी, राजस्थानी आदि कई भाषाएं शामिल हैं। शिव विवाह के पारम्परिक लोकगीत हिंदी/क्षेत्रीय भाषाओं में भोलेनाथ की अनूठी बारात, अजीब वेशभूषा और पार्वती जी के साथ उनके विवाह का वर्णन करते हैं, जो हास्य और भक्तिपूर्ण होते हैं। प्रमुख गीतों में बारात का ब्यौरा, जैसे बसहा चढ़ल सिब आयल पाहुन (नंदी पर सवार होकर शिव आए) काफी लोकप्रिय है।

बारात वर्णन गीत: भोला महादेव बम भोला महादेव...
जंगल में छाई हरियाली, दूल्हा बना जगत का बाली।
पार्वती कीं की प्रतिक्रिया (हास्य): जब बाराती (भूत-प्रेत) और शिव का भयंकर रूप पार्वती की मां ने देखा, तो वे डर गईं: बसहा चढ़ल सिब आयल पाहुन, जटा में गंगा, गले सर्प और अपनी बेटी को घर में बंद कर लिया।

ये गीत महाशिवरात्रि या विवाह उत्सव के दौरान महिलाओं द्वारा गाए जाते हैं, जिसमें महादेव के भस्मधारी रूप से लेकर उनके विवाह तक की कहानी छिपी होती है।

पुरुब नगरिया से आए सिउ जोगिया, परबत डारे पड़ाव
जोगिया सिउ जी से बोलैं मैया मदागिन, सुनो जोगी अरज हमारि
जो तुह जोगिया गौरा पर लुभाया गौरा जोगे बजना लै आय
हमरेहि देसे सासू नाहीं बजनवां, देबै डमरुआ बजाय
जो तुहूं जोगिया गौरा पे लोभाया, गौरा जोगे कपड़ा बेसाह
हमरे देसे सासू नाहीं कपड़वा, मृगछाला देबै ओढ़ाय हो
जो तुहूं जोगिया हो गौरा पै लोभान्या, गौरा जोगे सेंदुरा बेसाह
हमरेहि देसे सासू नाही सेंदुरवा, देबै भभुतिया चढ़ाय

भावार्थ:- शिव के फक्कड़ी स्वभाव, घुमक्कड़ी प्रवृत्तियों और निहंग होने का जितना प्रमाण लोकगीतों में मिलता है और कहीं मिल पाना कठिन है। गीत में गौरा की मां शिव जी से कहती हैं कि गौरी से विवाह करना हो तो बाजा-गाजा, सुंदर वस्त्र-आभूषण और सिंदूर ले आइए। इस पर भोलेपन से शिव जी कहते हैं कि सास जी! मेरे देस में बाजा-गाजा तो है नहीं, इसलिए मैं डमरू बजा दूंगा। वहां आभूषण भी नहीं मिलते, बस चूड़ियां और शंख के आभूषण पहना दूंगा। कपड़े नहीं मिलते, मृगछाल ओढ़ा दूंगा। हमारे यहां सिंदूर भी नही मिलता है, उसकी जगह भभूत चढ़ा दूंगा।

सुरही के गोबरा से अंगना लिपावैं गजमोती चौक पुराय
चन्नन चीरि गढ़ावैं पिढ़ैया, सिउ बैठे जटा ओरमाय
चौके बैठे सिउ गए अलसाई, कोहनी दे गौरा जगाय
कोहनी के मारे कोंहाइ गै महादेव, ना बोलै ना बतियांय
बहियां लपाइ गौरी सिउ के मनावैं, तब सिउ हंसहिं ठठाय

भावार्थ:- लोकगीतों में शिवजी कई रूपों में सामने आते हैं, सामान्य दम्पत्ति की ही तरह वे आपस में रूठते हैं और एक-दूसरे को मनाते भी हैं। शिव जी चौक पर बैठे अलसाए हैं, पार्वती उन्हें कुहनी से मारकर जगा लेती हैं। कुहनी की मार से शिव जी रुष्ट हो जाते हैं और मौन धारण कर लेते हैं। तब पार्वती बांह पसारकर उन्हें मनाती हैं और शिव जी ठठाकर हंस देते हैं।

•••

पुरुब नगरिया से आए सिउ जोगिया

स्निग्धा अवतंस

संघ के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में 'संघ यात्रा के 100 वर्ष : नए क्षितिज' इस दो दिवसीय संवाद कार्यक्रम का आयोजन मुम्बई में किया गया। यह कार्यक्रम दो सत्रों में था जिनमें पहले सत्र में गहन व्याख्यान और संवाद पर जोर दिया गया तथा दूसरे सत्र में सर्वसमावेशक प्रश्नोत्तर सत्र का आयोजन किया गया।

समाज संगठित और गुणवान बनेगा तभी देश में परिवर्तन होगा - डॉ. मोहन भागवत जी

मुम्बई। संघ के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित 'संघ यात्रा के 100 वर्ष : नए क्षितिज' इस दो दिवसीय संवाद कार्यक्रम का आयोजन में वर्ली स्थित नेहरू सेंटर में विगत 07 और 08 फरवरी को हुआ। इस अवसर पर पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रेरणादाई यात्रा, उसकी ऐतिहासिक प्रगति और समाज में योगदान का विस्तार से अवलोकन करते हुए स्थापना से लेकर राष्ट्रनिर्माण में निभाई गई भूमिका तक की यात्रा को स्पष्ट किया। उक्त अवसर पर मंच पर पश्चिम क्षेत्र संघचालक डॉ. जयंतीभाई भाडेसिया, कोंकण प्रांत संघचालक अर्जुन चांदेकर, मुंबई महानगर संघचालक सुरेश भगेरिया सहित कार्यक्रम में 900 से अधिक गणमान्य लोग उपस्थित थे। दो दिवसीय इस कार्यक्रम के पहले दिन गहन व्याख्यान और संवाद पर जोर दिया गया। संघ स्थापना की पृष्ठभूमि पर बोलते हुए पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने कहा कि संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार ने स्वतंत्रता आंदोलन की सभी धाराओं का अनुभव और चिंतन किया। इतिहास में भी हम बार-बार गुलाम बने। पराक्रम से स्वतंत्रता वापस पाई, लेकिन वह टिक नहीं सकी। अब भी हमें स्वतंत्रता मिलेगी, लेकिन फिर से गुलामी नहीं आएगी- इसकी क्या गारंटी है? हमारे समाज में कुछ कमी है, यह डॉ. हेडगेवार ने पहचाना। हम अपनी एकता भूल गए, स्वार्थ बढ़ गया, समाज गुणहीन बन गया, अनुशासन नहीं रहा। दरिद्रता, गरीबी और अज्ञान उत्पन्न हुआ। समाज को गुणवान, अनुशासित, समृद्ध और संगठित बनाए बिना स्वतंत्रता को टिकाया नहीं जा सकता। इसी उद्देश्य से डॉ. हेडगेवार ने विभिन्न प्रयोगों के माध्यम से 1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की। पू. सरसंघचालक ने स्पष्ट किया कि भारत का स्वभाव सनातन है। उन्होंने कहा, धर्मनिरपेक्षता शब्द गलत है, इसके स्थान पर पंथनिरपेक्षता शब्द होना चाहिए। बहना पानी का और जलना आग का धर्म है। धर्म हमारा स्वभाव और कर्तव्य है, जो इहलोक और परलोक में सुख देता है। धर्म सभी को उन्नत करता है। धर्म जिस सत्य के आधार पर खड़ा है, वह अस्तित्व की एकता का संदेश है। हमें महासत्ता नहीं बनना है, महासत्ता

बल से अपना वर्चस्व स्थापित करती है। हमें विश्वगुरु बनना है, पूरे विश्व को जोड़ना है। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में सर्वसमावेशक प्रश्नोत्तर सत्र का आयोजन किया गया। उन्होंने इस सत्र में लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमारे समाज के संगठित शक्ति के आधार पर देश को शक्तिशाली बनाने हेतु समाज को सशक्त करने के ध्येय को लेकर संघ आगे बढ़ रहा है। उन्होंने स्वदेशी व स्वबोध के बारे में भी चर्चा की और कहा कि ऐसे बहुत से विदेशी वस्तु है, जिसके बिना हमारा दैनिक व्यवहार चल सकता है। हमारे देश का रोजगार कैसे बढ़े, इसका विचार कर के ही वस्तु खरीदी करने का विचार प्रत्येक व्यक्ति को करना चाहिए। अपरिहार्य अंतरराष्ट्रीय व्यवहार भी किसी के दबाव में आए बिना हमारे देश के वातावरण के अनुकूल पद्धति से करना सम्भव होगा। कार्यक्रम के दूसरे दिन प्रश्नोत्तर सत्र का आयोजन किया गया। इस सत्र में पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने कार्यक्रम में उपस्थित सदस्यों द्वारा पूछे गए विभिन्न राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विषयों से जुड़े प्रश्नों के सीधे उत्तर दिए। उपस्थित लोगों द्वारा पूछे गए कुल 143 प्रश्नों को 14 श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया। इनमें संघनीति, हिंदुत्व, राष्ट्रीय परिदृश्य, शिक्षा, अर्थव्यवस्था, राजनीति, विदेश नीति, राष्ट्रीय सुरक्षा, संस्कृति, कला, खेल व भाषा, जीवनशैली, पर्यावरण आदि विभिन्न विषयों से जुड़े प्रश्नों पर पू. सरसंघचालक जी ने समाधानकारी उत्तर दिए। बांग्लादेश की वर्तमान स्थिति व हिंदुओं पर होने रहे अत्याचार पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि हिंदू संगठित होंगे तब ही अत्याचारों पर स्वतः ही रोक लग जाएगी। उन्होंने बांग्लादेश के सवा करोड़ हिंदुओं से संगठित होने का आह्वान किया। उक्त कार्यक्रम मेंराधाकिशन दमाणी, अभिनेता सलमान खान, रणवीर कपूर, हेमा मालिनी, संजय जिंदल, दीपक पारेख, अजय पिरामल, सुभाष चंद्रा, रोनी स्क्रूवाला, विनीत जैन, नितेश तिवारी, मोहित सूरी, रमेश तौरानी, बोनी कपूर, ओम राउत, वरिष्ठ निर्देशक सुभाष घई, पार्श्वगायक अदनान सामी, निर्देशक विपुल शाह, इंदर कुमार, प्रसाद ओक, आईआईटी मुम्बई के शिरीष केदारे, स्वामी स्वरूपानंद, दै. पुढारी के योगेश जाधव, संस्कार भारती कोंकण प्रांत अध्यक्ष अभिनेता सुनील बर्वे, समेत अन्य मान्यवर उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन कोंकण प्रांत कार्यकारिणी सदस्य विवेक भागवत ने किया। मंचासीन अतिथियों का परिचय कोंकण प्रांत सहसंघचालक विष्णु वझे ने कराया। कार्यक्रम की प्रस्तावना कोंकण प्रांत सम्पर्क प्रमुख अजय जोशी ने रखी।

●●●

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने के लिए मौलिक एवं संग्रहणीय पुस्तक

हिंदी विवेक
"We Work For A Better World"

पद्मश्री रमेश पतंगे लिखित
'हिंदी विवेक' द्वारा प्रकाशित

हम संघ में क्यों हैं...

संघ विचारों की मूल प्रेरणा, संघकार्य को समझने की प्रक्रिया और इन सभी से संघ स्वयंसेवकों को अनायास मिलनेवाले राष्ट्रबोध और कर्तव्यबोध का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

पंजीयन करें

पुस्तक का मूल्य ₹250/-

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, Branch - Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483, भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

प्रवीण सिन्हा

अनेक विवादास्पद स्थितियों के पैदा होने और उसके समाप्त होने के दौरान भारतीय टीम अपने शुरुआती 2 मैच जीतकर सुपर 8 में प्रवेश पाने की राह प्रशस्त कर चुकी है। अब 15 फरवरी को भारत और पाकिस्तान का मुकाबला कोलम्बो के प्रेमदासा स्टेडियम में होगा।

पाकिस्तान फिर हुआ पस्त

भारतीय कारवां सूर्या की चमक बिखेरने श्रीलंका की ओर कूच कर चुका है। टी20 विश्व कप की शुरुआत से पहले ही पाकिस्तान ने आदतन बाधा डालने का प्रयास किया था। भारत के साथ मैच के बहिष्कार की जो गीदड़-भभकी पाकिस्तानी सरकार और पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने दी थी, उस पर लगने वाले सम्भावित प्रतिबंध या भारी आर्थिक क्षति की स्थिति पैदा होते देख वही पाकिस्तान यू-टर्न लेने पर मजबूर हो गया। पाकिस्तान ने 4 फरवरी को घोषणा की थी कि भारत के साथ टी20 विश्व कप मुकाबला नहीं खेलेंगे, लेकिन विश्व क्रिकेट जगत में हो रही किरकिरी के बीच एक सप्ताह के अंदर ही घुटनों पर आ गया। पाकिस्तान ने स्वीकार किया कि भारत के साथ पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार मैच खेलेगा। भारत और श्रीलंका में चल रहे विश्व कप का मजा किरकिरा करने की उसकी नापाक प्रयास धरा का धरा रह गया और अंततः क्रिकेट की जीत हुई।

क्रिकेट विशेषज्ञों को इस बात का भलीभांति आभास था कि पाकिस्तान की माली हालात बेहद खराब है। विश्व क्रिकेट में उसकी हैसियत भारत या अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) के आगे नगण्य है। एक सप्ताह की ड्रामेबाजी के बाद अंततः यह तय था कि उसे टी20 विश्व कप का मैच खेलना ही था... और ठीक वैसा ही हुआ। वास्तव में, पाकिस्तान ने अपना अस्तित्व बचाए रखने के लिए क्रिकेट के जरिए राजनीति करने की एक नाकाम कोशिश की। उसका ध्येय सिर्फ पैसा बनाना था। पाकिस्तान कहने को भले ही बांग्लादेश को साथ देने की कोशिश कर रहा था, लेकिन अंदर से वह सिर्फ और अधिक पैसे कमाने की कोशिश करने की जुगाड़ लगा रहा था। पाकिस्तान को लगा कि वह भारत के खिलाफ मैच का बहिष्कार कर विश्व क्रिकेट जगत में भूचाल सा ला देगा। लेकिन ऐसा कुछ हुआ नहीं। आईसीसी ने उसकी मंशा समझ ली और उसकी एक भी मांग माने बिना विश्व कप में खेलने को मजबूर कर दिया। दरअसल, पाकिस्तान ने विश्व कप में हिस्सेदारी से पहले आईसीसी के समक्ष कुछ शर्तें रखीं जो इस प्रकार थीं -

बांग्लादेश को सुरक्षा कारणों से विश्व कप से बाहर होने के बाद उन पर कोई जुर्माना न ठोका जाए, जिसे आईसीसी ने मान लिया

विश्व कप से होने वाली आय का हिस्सा बांग्लादेश को भी मिले, आईसीसी ने कुछ भी जवाब नहीं दिया

पाकिस्तान को भी विश्व कप से होने वाली आय का थोड़ा ज्यादा हिस्सा मिले, आईसीसी ने कोई तवज्जो नहीं दी

भारत-पाक के साथ द्विपक्षीय और बांग्लादेश सहित

त्रिकोणीय क्रिकेट सीरीज कराने का सिलसिला शुरू किया जाए, आईसीसी ने कोई तवज्जो नहीं दी

दरअसल, पाकिस्तान की इन शर्तों में उसका बांग्लादेश के प्रति भाईचारा निभाने की कोशिश कम और खुद की कमाई के मंसूबे साफ दिखे। आईसीसी ने पाकिस्तान को आड़े हाथों लेते हुए उसे उसकी हैसियत बता दी।

एक वाक्य में कहा जाए तो आईसीसी कहती- मैच नहीं खेलोगे तो कोई रहम नहीं किया जाएगा और हर्जाने इतने ठोके जाएंगे कि उसे चुका न पाओगे। दरअसल, आईसीसी ने भारत में विश्व कप न खेलने की जिद पर अड़े बांग्लादेश को टूर्नामेंट से बाहर कर पाकिस्तान को स्पष्ट संकेत दे दिया कि उसे भी विश्व कप से बाहर कर दिया जाए तो टूर्नामेंट के आयोजन पर कोई खास असर नहीं पड़ेगा। उल्टा आईसीसी पाकिस्तान पर प्रतिबंध जैसे कठोर कदम उठाने के साथ-साथ भारी आर्थिक जुर्माना भी ठोंक सकती है। पाकिस्तान की नापाक चाल को ध्वस्त करने के लिए आईसीसी ने एक आईना दिखाया कि या तो क्रिकेट के रोमांच को चलने दो या फिर मैच न खेलने की स्थिति में आईसीसी से मिलने वाली वार्षिक (करीबन 10 अरब पाकिस्तानी मुद्रा) आय से भी हाथ धोना पड़ेगा। यही नहीं, मैच के बहिष्कार के बाद प्रसारणकर्ता को हर्जाने के तौर पर जो करोड़ों डॉलर (लगभग 2300 करोड़े रुपए) चुकाने होते, जो पाकिस्तान की हैसियत से बाहर था। पाकिस्तान के पूर्व क्रिकेटर रमीज रजा के बयान से पीसीबी की बेचारगी बखूबी समझी जा सकती है। रमीज ने कहा, पीसीबी की कुल हैसियत कोई 600 करोड़ रुपए है। पीसीबी अपनी कुल कमाई की 50 प्रतिशत राशि आईसीसी से हासिल करता है। दूसरी ओर, आईसीसी की कुल कमाई की 90 प्रतिशत राशि बीसीसीआई से आती है। अगर भारत बीसीसीआई को निर्देश दे दे कि वह अपनी कमाई का एक भी हिस्सा पाकिस्तान को न दे तो पीसीबी को ध्वस्त होते देर नहीं लगेगी। रमीज के इस बयान से पाकिस्तान की बेचारगी भलीभांति समझी जा सकती है।

वैसे, पाकिस्तान अब भी इतनी बेइज्जती होने के बावजूद अपनी धूर्तता से बाज नहीं आ रहा है। उसकी ओर से झूठे दावे किए जा रहे हैं कि क्रिकेट की साख को बचाने के लिए उसने भारत के साथ मैच खेलने की सहमति जता दी, या फिर श्रीलंका, बांग्लादेश और यूएई क्रिकेट बोर्डों की मिन्नतों के बाद यू-टर्न लेने को सहमत हो गया। ●●●

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For A Better World
मासिक पत्रिका

शुल्क ₹ 500

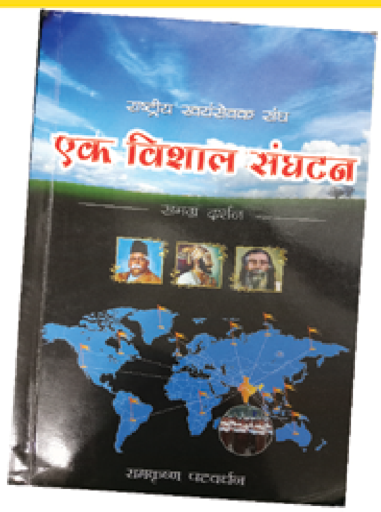

रा. स्व. संघ की स्थापना से लेकर शतकपूर्ति की यात्रा के विभिन्न पड़ावों तथा भविष्य के उद्देश्यों का सम्पूर्ण संकलन व आंकलन करने वाली पुस्तक

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाईन पंजीयन करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA-HINDI VIVEK

Bank : Bank of Maharashtra **Branch :** Prabhadevi

A/C No. : 60085108000 **IFSC :** MAHB0000318

सम्पर्क - 9594991884 Email : hindivivekvargani@gmail.com

भारत की लम्बी छलांग

सफलता

डॉ. शुभ्रता मिश्रा

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने सॉलिड फ्यूल डक्टेड रैमजेट (एसएफडीआर) तकनीक का सफल परीक्षण किया। परीक्षण की सफलता के बाद भारत इस तकनीक से लैस विशिष्ट देशों की श्रेणी में शामिल हो गया है।

भारत ने हाल ही में रक्षा प्रौद्योगिकी में एक और ऐतिहासिक उपलब्धि प्राप्त करते हुए सॉलिड फ्यूल डक्टेड रैमजेट (एसएफडीआर) तकनीक का सफल परीक्षण किया है। एसएफडीआर तकनीक पारम्परिक रॉकेट मोटर से कहीं अधिक उन्नत है। इसमें ठोस ईंधन का उपयोग कर हवा को संपीड़ित किया जाता है, जिससे मिसाइल अधिक दूरी तक और लम्बे समय तक उच्च गति बनाए रख सकती है। यह क्षमता हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइलों को अधिक प्रभावी बनाती है और लक्ष्य को भेदने की सम्भावना कई गुना बढ़ जाती है। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने 3 फरवरी 2026 को ओडिशा के चांदीपुर स्थित इंटीग्रेटेड टेस्ट रेंज से इस परीक्षण में सफलता के साथ भारत को अमेरिका, रूस, फ्रांस और चीन जैसे उन चुनिंदा देशों में शामिल कर दिया है, जिनके पास यह अत्याधुनिक मिसाइल प्रणोदन तकनीक उपलब्ध है। इस सूची में शामिल होना न केवल वैज्ञानिक और तकनीकी क्षमता का प्रमाण है बल्कि यह भारत की सामरिक महत्वाकांक्षाओं और आत्मनिर्भरता के व्यापक परिदृश्य में एक निर्णायक कदम है।

इससे पहले भी डीआरडीओ को रक्षा तकनीक के क्षेत्र में बड़ी सफलताएं मिली हैं। इनमें 'अस्त्र' मिसाइल, अग्नि-5 बैलिस्टिक मिसाइल के मल्टीपल इंडिपेंडेंटली टारगेटेबल री-एंट्री व्हीकल (एमआईआरवी) परीक्षण और हाइपरसोनिक टेक्नोलॉजी डेमोंस्ट्रेटर व्हीकल तथा आकाश और आकाश-एनजी जैसी वायु रक्षा प्रणालियां शामिल हैं। इन सभी से सशक्त होती देश की सुरक्षा व्यवस्था यह सिद्ध करती है कि भारत की रक्षा आत्मनिर्भरता महज एक नीतिगत नारा नहीं है बल्कि एक ठोस वास्तविकता बन चुकी है। आज देश की लम्बी दूरी की हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइल तकनीक 100 किलोमीटर से अधिक दूरी पर शत्रु के विमान और अन्य हवाई लक्ष्यों को भेद सकती हैं। वहीं अत्याधुनिक तकनीक से लैस स्वदेशी एईएसए रडार एक साथ कई लक्ष्यों को ट्रैक कर मिसाइलों को सटीक दिशा प्रदान करता है। वैश्विक रक्षा बाजार में प्रतिस्पर्धी बनते हुए भारत की स्वदेशी विकसित मिसाइलों और रडारों से विदेशी आयात पर निर्भरता कम हुई है। स्वदेशी रडार तकनीक से लेकर रिकॉर्ड उत्पादन और निर्यात तक हर क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति का विश्लेषण दर्शाता है कि भारत दुनिया के सबसे बड़े शस्त्र-अस्त्र आयातकों में से एक स्वदेशी उत्पादन का महत्वपूर्ण केंद्र बनकर उभरा है। आत्मनिर्भर भारत और मेक इन इंडिया नीतियों के कारण देश का रक्षा उत्पादन 1.54 लाख करोड़ के कीर्तिमान स्तर पर पहुंच गया है। इतना ही नहीं देश के रक्षा निर्यात में 34 गुना वृद्धि के साथ भारत अब दुनिया के 100 से अधिक देशों को हेलीकॉप्टर, रडार, मिसाइल सिस्टम, बुलेटप्रूफ जैकेट और अन्य उपकरण निर्यात कर रहा है।

रक्षा आत्मनिर्भरता की दिशा में किए जा रहे निरंतर नीतिगत सुधार और स्वदेशीकरण के लिए रक्षा अधिग्रहण प्रक्रिया (डीएपी 2020) में बाय इंडियन-आडीडीएम श्रेणी को प्राथमिकता दी है, जिससे स्वदेशी डिजाइन, विकास और विनिर्माण को बढ़ावा मिला है। सकारात्मक स्वदेशीकरण सूचियां आयात को सीमित कर घरेलू उत्पादन को प्रोत्साहित करती हैं। आडेक्स और सृजन जैसे पोर्टल नवाचार और उद्योग-अकादमिक सहयोग को बढ़ावा देते हैं। इन पहलों ने रक्षा उद्योग को एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र प्रदान किया है। केंद्रीय बजट 2026-27 में रक्षा मंत्रालय को 7.85 लाख करोड़ रुपए का सबसे बड़ा आवंटन मिला है।

•••

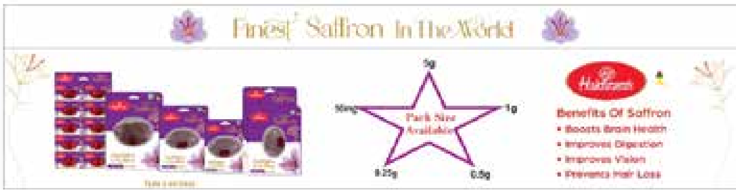

Haldiram's

Vipin Aggarwal
THE SAFFRON EXPERT ™

केसर तिलक

★दिव्यता ★ समृद्धि ★ शुभ भाग्य
★संपत्ति ★ कैरियर के अच्छे अवसर

अपने भीतर बुद्धि, दूरदर्शिता समृद्धि और भक्ति बढाने के लिए केसर तिलक लगाऐ।

तिलक लगाने का अर्थ है चक्रों और ऊर्जा बिंदुओं को सक्रिय करना जिससे आपके भीतर अधिक सामंजस्य और खुशी का विकास होता है। केसर तिलक **आज्ञा चक्र** पर लगाया जाता है, जो माथे का मध्य भाग है, यह चक्र दिव्यता, अंतर्ज्ञान और बुद्धि से संबंधित है। मनुष्य के सभी कार्य इसी विशिष्ट बिंदु द्वारा नियंत्रित होते हैं, और संतुलित होने पर यह भावनात्मक, शारीरिक और आध्यात्मिक ऊर्जा को बढाता है। **विशुद्धि चक्र** का संबंध संचार और अभिव्यक्ति से है। नाभि मनुष्य के शरीर का सबसे महत्वपूर्ण बिंदु है और यह मानव जीवन का केंद्र है जो **मणिपुर चक्र** से संबंधित है।*

ज्योतिषीय दृष्टि से केसर का तिलक बृहस्पति (बुद्धि, धन, आध्यात्मिकता), बुध (वित्त, बुद्धि, संचार, भावनात्मक ऊर्जा), केतु (अंतर्ज्ञान, अंतर्दृष्टि और आंतरिक शांति की भावना) और मंगल का समर्थन) की ऊर्जा को संतुलित करता है।*

केसर तिलक कैसे तैयार करें

कुछ पिसे हुए केसर के रेशे (धागे) या केसर पाउडर लें, उसमें पवित्र जल या गंगाजल की कुछ बूँदें डालकर पेस्ट बना लें। आपका केसर का तिलक तैयार है। अपने जीवन को बेहतर बनाने और ऊर्जा बिंदुओं को संतुलित करने के लिए **अनामिका उंगली** से माथे, कानों, गले और नाभि पर लगाएँ। चाँदी की डिब्बी में इसे तैयार करना व रखना अधिक शुभ माना जाता है।

*Data on file

GROCERIES IMPEX : +91-9999092561, 9650635204 | vipin@groceriesimpex.com
Registered Office Address : R-49, Rita Block, Shakarpur, Delhi-110092.
Packing Unit : D-94/A, Matiala Extension, Dwarka, New Delhi-110059.

वैश्विक परिदृश्य में भारत का डिजिटल मॉडल

अनुकरण

प्रज्ञा गौतम

भारत के डिजिटल मॉडल को कई देश अपना रहे हैं। भारत सरकार ने हाल ही में इंडिया स्टैक पर सहयोग हेतु 23 देशों के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। जिनमें यूपीआई, डिजिटल भुगतान, डिजीलॉकर, उमंग आदि शामिल हैं। भारत का डिजिटल भुगतान मॉडल पर 8 से अधिक देश काम कर रहे हैं।

आधार कार्ड से लेकर इंडिया स्टैक तक की यात्रा भारत के डिजिटल परिवर्तन की एक ऐतिहासिक गाथा है। यह यात्रा एक बायोमेट्रिक पहचान पत्र आधार के रूप में शुरू होकर अब एक समावेशी डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर में बदल गई है। इंडिया स्टैक का उद्देश्य देश के बेहतर विकासात्मक और व्यावसायिक परिणामों को सक्षम बनाने के लिए विभिन्न डिजिटल समाधानों को एक साथ लाना है।

वर्ष 2009 में विशिष्ट पहचान प्राधिकरण की स्थापना और वर्ष 2010 में पहले आधार कार्ड के साथ इसकी शुरुआत हुई। इसका उद्देश्य निवासियों को एक अद्वितीय (यूनिक) डिजिटल पहचान प्रदान करना था, जो बायोमेट्रिक (फिंगरप्रिंट, आइरिस) पर आधारित हो। इसने कागजी कार्यवाही को कम किया और पहचान की तत्काल पुष्टि की नींव रखी।

आधार-आधारित वित्तीय समावेश (वर्ष 2011 से 2014) इसका अगला कदम था। जन धन योजना (2014) के अंतर्गत लाखों गरीबों के बैंक खाते खोले गए, जिससे वित्तीय समावेश को गति मिली। पेपरलेस और डिजिटल सेवाओं का और विस्तार वर्ष 2015 से प्रारम्भ हुआ। आधार आधारित ई केवाईसी शुरू किया गया, जिससे बैंकिंग और अन्य सेवाओं में केवाईसी की लागत घट गई।

वर्ष 2015 में इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने डिजीलॉकर लॉन्च किया, जिससे नागरिक अपने कागजात सुरक्षित रूप से डिजिटल रूप से संग्रहीत और साझा कर सकें। इसके बाद आधार धारकों को किसी भी कागजात पर डिजिटल हस्ताक्षर (श ाि्ळसप) करने की सुविधा मिली। वर्ष 2016 में नेशनल पेमेंट्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया द्वारा यूपीआई (यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस लॉन्च किया गया, जिसने रियल-टाइम मोबाइल भुगतान में क्रांति ला दी।

भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा डेटा साझा करने के लिए अकाउंट अग्रीगेटर फ्रेमवर्क तैयार किया गया, जिसमें विभिन्न वित्तीय संस्थानों (बैंक, म्यूचूअल फंड, बीमा) आदि में बिखरे अपने वित्तीय डेटा को एक साथ देखने और सहमति से किसी अन्य संस्था को साझा करने की अनुमति दी जाती है।

भारत के इस डिजिटल पब्लिक इंफ्रस्ट्रक्चर की बदौलत

'इंडिया स्टैक ग्लोबल' भारत के डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर को वैश्विक स्तर पर प्रदर्शित करता है ताकि मित्र राष्ट्र इसे अपने देश में अपना सकें। वर्तमान में इसमें 18 प्रमुख परियोजनाएं शामिल हैं।

- आधार- बायोमेट्रिक आधारित डिजिटल पहचान।
- यूपीआई- रीयल टाइम डिजिटल भुगतान प्रणाली।
- कोविन- टीकाकरण सेवाओं के सम्पूर्ण प्रबंधन के लिए एक डिजिटल प्लेटफॉर्म प्रदान करता है।
- एपीआई सेतु- एपीआई के माध्यम से सरकारी डेटा और सेवाओं को सुरक्षित और मानकीकृत तरीके से साझा करने में सक्षम बनाता है।
- आरोग्य सेतु- स्वास्थ्य सलाह और स्वास्थ्य सम्बंधी सेवाओं की पहुंच को सुगम बनाता है।
- सरकारी ई-मार्केटप्लेस- सरकारी संस्थाओं द्वारा वस्तुओं और सेवाओं की पारदर्शी और कुशल खरीद के लिए ऑनलाइन मंच प्रदान करता है।
- डिजीलॉकर- नागरिकों के इलेक्ट्रॉनिक कागजातों को सहेजने और साझा करने के लिए।
- उमंग- मोबाइल और वेब प्लेटफॉर्म जो सरकारी सेवाओं की एकल विंडो पहुंच प्रदान करता है।
- दीक्षा- एक राष्ट्रीय डिजिटल प्लेटफॉर्म जो शिक्षकों और शिक्षार्थियों तक ई सामग्री और शैक्षणिक संसाधनों को पहुंचाता है।
- ई-संजीवनी- टेलीमेडिसिन प्लेटफॉर्म जो ग्रामीण क्षेत्रों में दूरस्थ चिकित्सा परामर्श उपलब्ध कराता है।
- ई-अस्पताल- ऑनलाइन अस्पताल प्रबंधन प्रणाली।
- ई-ऑफिस- सरकारी कार्यालयों में इलेक्ट्रॉनिक फाइल प्रबंधन। ❊ई-कोर्ट- अदालती प्रक्रियाओं को डिजिटल बनाना।
- पोषण ट्रैकर- पोषण सेवा वितरण की वास्तविक समय में निगरानी। ❊एनसीडी प्लेटफॉर्म- प्रमुख गैर संक्रामक रोगों की जांच, निदान और प्रबंधन।
- स्किल इंडिया डिजिटल हब- कौशल विकास, प्रशिक्षण और रोजगार का एकीकृत प्लेटफॉर्म।
- सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली - सरकारी निधियों और लाभ हस्तांतरण की निगरानी के लिए।
- पीएम गतिशक्ति- बुनियादी ढांचा परियोजनाओं का एकीकृत डिजिटल प्लेटफॉर्म।

आज 1.4 बिलियन से अधिक आधार नामांकन हैं और यूपीआई 10 बिलियन से अधिक मासिक लेनदेन कर रहा है। भारत सरकार ने हाल ही में इंडिया स्टैक पर सहयोग हेतु 23 देशों के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। ये देश हैं- आर्मेनिया, सिएरा लियोन, सूरीनाम, अंटीगुआ और बरबुडा, पापुआ न्यू गिनी, त्रिणीनाद और टोबैगो, तंजानिया, केन्या, क्यूबा, कोलम्बिया, लाओ पीपुल्स, सेंट किट्स और नेविस, इथियोपिया, जमैका, गाम्बिया, फ़िजी, गुयाना, वेनेजुएला, श्री लंका, ब्राजील, लेसोथो, मालदीव और मंगोलिया।

डिजिटल भुगतान- भारत का यूपीआई इस समझौते के पहले से ही 8 से अधिक देशों में काम कर रहा है। इनमें यूएई, सिंगापुर, भूटान, नेपाल, श्रीलंका, फ्रांस और कतर शामिल हैं।

डिजीलॉकर - इसके उपयोग के लिए क्यूबा, केन्या, यूएई और लाओ पीपुल डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ने विशेष समझौते किए हैं।

व्यापक डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर- ऊपर वर्णित 23 देश व्यापक रूप से आधार, यूपीआई, कोविन, एपीआई सेतु, उमंग और डिजीलॉकर समेत अन्य डिजिटल समाधानों के मिश्रण को अपना रहे हैं।

आगे की रणनीतियां

भारत की जी20 अध्यक्षता (2023) के दौरान शुरू किया गया ग्लोबल डीपीआई रिपॉजटरी एक वैश्विक ज्ञान मंच के रूप में कार्य कर रहा है। भारत का उद्देश्य 'ग्लोबल डिजिटल साउथ' के सिरमौर के रूप में स्थापित होना और एक ओपन-सोर्स और सुरक्षित डिजिटल पारिस्थितिक तंत्र तैयार करना है। इसमें तकनीक का हस्तानांतरण और प्रतिकृतिकरण शामिल है। यूपीआई के वैश्विक विस्तार से भारतीयों के लिए कम लागत में पैसे भेजना सम्भव हो सकेगा। भारत इन 23 देशों में अपने स्टैक के आधार पर स्थानीय स्टार्टअप को प्रशिक्षित और विकसित कर रहा है। इसके अलावा भारत का उद्देश्य पश्चिमी देशों की कॉर्पोरेट केंद्रित प्रणालियों और चीन की निगरानी केंद्रित प्रणालियों के बीच स्वयं को एक बेहतर विकल्प (स्टैक) के रूप में प्रस्तुत करना है।

आगे की रणनीति मुख्य रूप से कृत्रिम बुद्धिमत्ता, कम्प्यूटिंग क्षमता, जन-केंद्रित सेवाओं और डीपीआई के वैश्विक विस्तार पर केंद्रित है। ऊर्जा क्षेत्र के लिए इंडिया एनर्जी स्टैक का साझा डिजिटल ढांचा तैयार किया जा रहा है। मेघराज क्लाउड के साथ डेटा और साइबर सुरक्षा को मजबूत किया जाएगा। फरवरी 2026 की रिपोर्ट के अनुसार भारत आधारभूत से अनुप्रयोग आधारित विकास की तरफ बढ़ रहा है, जिसका लक्ष्य 2030 तक 1 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था प्राप्त करना है।

●●●

रंजीत कुमार

पूरी दुनिया में चल रही व्यापक उथल-पुथल के वर्तमान दौर में अरब देशों द्वारा भारत के साथ व्यापारिक रिश्तों को मजबूत करने का निर्णय भारत के लिए तो लाभदायक सिद्ध होगा ही, साथ ही साथ विश्व आर्थिक जगत में भारत की व्यापारिक शक्ति का डंका भी बजेगा।

बजेगा भारत का डंका

ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, संयुक्त अरब अमीरात, यूरोपीय संघ और सबसे ताजा अमेरिका के साथ मुक्त व्यापार समझौता कर लेने के बाद खाड़ी के 6 देशों के शक्तिशाली आर्थिक गुट खाड़ी सहयोग परिषद (गल्फ कोआपरेशन काउंसिल) भी भारत के साथ मुक्त व्यापार संधि करने को तैयार हुआ है। खाड़ी सहयोग परिषद के साथ नई दिल्ली में 5 फरवरी को हुई वार्ता के पहले अरब क्षेत्रों के सभी 22 देशों के विदेश मंत्रियों द्वारा नई दिल्ली में ही विदेश मंत्री एस. जयशंकर के साथ बातचीत के लिए पहुंचना भी यह दर्शाता है कि अरब क्षेत्र के देश भारत को कितना महत्व देते हैं।

अरब देशों के साथ भारत के 5 हजार सालों से ऐतिहासिक व्यापारिक एवं आर्थिक रिश्ते रहे हैं। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी रिश्तों की इस गहरी आधारशिला पर खाड़ी के देशों के साथ रिश्ते मजबूत करने पर विशेष बल देते रहे हैं और इस मंशा से उन्होंने खाड़ी के शासकों के साथ निजी स्तर पर सम्बंधों को गहरा करने में रुचि ली है। इसी का परिणाम है कि हाल में अरब देशों के साथ भारत ने न केवल आर्थिक बल्कि सामरिक व कूटनीतिक रिश्तों को नया आयाम दिया है।

हालांकि भारत ने खाड़ी सहयोग परिषद के एक सदस्य संयुक्त अरब अमीरात के साथ पहले ही मुक्त व्यापार समझौता सम्पन्न कर लिया है, लेकिन अब सामूहिक तौर पर खाड़ी सहयोग परिषद के 6 सदस्यों जिनमें सऊदी अरब, कुवैत, संयुक्त अरब अमीरात, कतर, बहरीन और ओमान द्वारा भारत से मुक्त व्यापार समझौता के लिए वार्ता चलाने के लिए हरी झंडी दिखाना बहुत ही महत्वपूर्ण है।

खाड़ी के 6 देशों की साझी आर्थिक शक्ति भारत के लगभग सवा चार ट्रिलियन डॉलर सकल घरेलू उत्पाद के मुकाबले 2.3 ट्रिलियन डालर की है, जिससे हम समझ सकते हैं कि खाड़ी के इन 6 देशों के साथ मुक्त व्यापार होने से भारतीय कारोबारियों के लिए कितना बड़ा बाजार खुल जाएगा। खाड़ी सहयोग परिषद के सदस्य देशों की कुल जनसंख्या 6 करोड़ 15 लाख है, जबकि वहां प्रवासी भारतीयों की संख्या 90 लाख से एक करोड़ के बीच है। ये सभी लोग भारतीय उत्पादों के उपभोक्ता हैं, इसलिए इन देशों के साथ जब भारत मुक्त व्यापार समझौता कर लेगा तब वहां भारतीय उत्पाद अन्य देशों के उत्पादों की तुलना में अधिक सस्ते हो जाएंगे। इस तरह भारत के निर्माण सेक्टर के लिए अपना कारोबार बढ़ाने का और अच्छा अवसर

मिलेगा। खाड़ी के 6 देशों में रह रहे भारतीय मूल के ये लोग खाड़ी के देशों के साथ रिश्तों के मजबूत पुल का काम करते हैं। खाड़ी के शासक भी उनके आर्थिक विकास में प्रवासी भारतीयों के योगदान को बहुत महत्व देते हैं। इसके अलावा खाड़ी के देशों में भारत की कम्पनियों ने भी अपना कारोबार फैलाने के लिए काफी निवेश किया है।

खाड़ी सहयोग परिषद के देशों के साथ भारत का वर्तमान व्यापार लगभग 169 अरब डॉलर सालाना है, जिसमें भारत का निर्यात 57 अरब डॉलर और आयात 122 अरब डॉलर का था। इन देशों को भारत मुख्य तौर पर इंजीनियरी सामान, चावल, कपड़ा मशीनरी, हीरे-जवाहरात आदि निर्यात करता है, जबकि भारत मुख्य तौर पर खनिज तेल, पेट्रो रसायन और सोना जैसे कीमती धातुओं का आयात करता है। खाड़ी सहयोग परिषद भारत में होने वाले विदेशी निवेश का एक बड़ा स्रोत भी है। पिछले वर्ष सितम्बर तक भारत में खाड़ी के देशों से लगभग 32 अरब डॉलर का निवेश हुआ। भारत अपने कुल विदेशी व्यापार का 15.42 प्रतिशत खाड़ी के देशों के साथ करता है। पिछले 5 सालों में खाड़ी के देशों के साथ भारत के व्यापार में औसतन 15.3 प्रतिशत की सालाना बढ़ोत्तरी हुई है। इसलिए अनुमान लगाया जा रहा है कि दोनों पक्षों के बीच मुक्त व्यापार संधि हो जाने से अगले कुछ सालों के भीतर ही वर्तमान व्यापार का स्तर दो गुना अधिक हो जाएगा।

अब तेजी से बदलती भूराजनीतिक स्थिति की दृष्टि से जिस तरह दुनिया के प्रभावशाली देश जैसे अमेरिका, यूरोप आदि भारत के साथ द्विपक्षीय व्यापार समझौते कर रहे हैं, उसी तरह खाड़ी के देश भी भारत के साथ व्यापारिक रिश्तों का सुनहरा अवसर चूकना नहीं चाहते। हालांकि खाड़ी के देशों के साथ 2004 में ही मुक्त व्यापार संधि करने के प्रस्ताव पर बातचीत शुरु की गई थी, लेकिन कई कारणों से बातचीत का यह सिलसिला कभी तेजी पकड़ता तो कभी धीमा हो जाता। अब नए सिरे से वार्ता बहाल करने के लिए सहमति का पत्र जारी किया गया है, उससे लगता है कि खाड़ी के देश भी भारत के साथ मुक्त व्यापार संधि को सम्पन्न कर दोनों पक्षों के बीच आर्थिक व कूटनीतिक क्षेत्रों में सहयोग को और गहरा करने को प्रतिबद्ध हैं। मुख्यतः मुस्लिम बहुल क्षेत्र होने के कारण पाकिस्तान खाड़ी के देशों को भारत के विरुद्ध भड़काने की कुटिल चालें चलता रहा है, लेकिन अब जबकि खाड़ी के देश भारत के साथ न केवल व्यापारिक बल्कि कूटनीतिक रिश्ते भी मजबूत करने को प्राथमिकता दे रहे हैं, उससे खाड़ी के देशों में भारत के अनुकुल राजनयिक वातावरण तो बन ही चुका है, आतंकवाद के विरुद्ध भी भारत को समर्थन मजबूत होता जा रहा है।

दोनों पक्षों के बीच यह व्यापार संधि वास्तव में प्रवासी भारतीयों के लिए वरदान सिद्ध होगी। इससे भारत का निर्माण क्षेत्र भी काफी लाभान्वित होगा, जिससे भारत में रोजगार के असीम नए अवसर पैदा होंगे और भारत के निर्यात में तो भारी बढ़ोत्तरी होगी ही, साथ ही भारत के सकल घरेलू उत्पाद में भी वृद्धि देखने को मिलेगी। खाड़ी के देशों के अमीर शेख भी भारत को अपने निवेश का मुख्य ठिकाना बनाने को प्रेरित होंगे। इसी मंशा से खाड़ी सहयोग परिषद और भारत ने मुक्त व्यापार संधि पर बातचीत करने के लिए एक सहमति पत्र जारी किया है, जिसमें व्यापार संधि के विभिन्न पहलुओं का निर्धारण किया गया है। इस बातचीत के लिए भारत आए खाड़ी सहयोग परिषद के सेक्रेटरी जनरल और मुख्य वार्ताकार डॉ. रजा अल मरजूकी ने भारतीय अधिकारियों के साथ सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किए। ●●●

सुभाष चंद्र

राहुल गांधी की जुबान पहले भी सिख समुदाय को लेकर फिसल चुकी है। वहीं सांसद रवनीत बिट्टू को लेकर राहुल गांधी ने जो वक्तव्य दिया, वह विवाद के घेरे में आ गया है।

राहुल गांधी की फिसलती जुबान

संसद परिसर में हुई एक टिप्पणी ने एक बार फिर राजनीतिक संवाद की गिरती भाषा पर प्रश्न खड़े कर दिए हैं। यह घटना उस समय हुई जब राहुल गांधी निलम्बित सांसदों के साथ प्रदर्शन कर रहे थे और उसी दौरान बिट्टू वहां से गुजरे। राहुल गांधी ने हाथ मिलाने का प्रयास किया, जिसे रवनीत सिंह बिट्टू ने अस्वीकार कर दिया।

लोकतंत्र में मतभेद स्वाभाविक हैं, लेकिन सार्वजनिक जीवन में प्रयुक्त शब्दों की मर्यादा उतनी ही आवश्यक है। संसद केवल विधायी कार्यों का मंच नहीं बल्कि लोकतांत्रिक शिष्टाचार का प्रतीक भी है। ऐसे में नेताओं के शब्द केवल व्यक्तिगत नहीं रहते, वे व्यापक सामाजिक और राजनीतिक अर्थ ग्रहण कर लेते हैं। यह भी सच है कि राजनीतिक टकराव के इस दौर में वक्तव्य अधिकांश संदर्भ से हटकर देखे जाते हैं और तुरंत राजनीतिक अर्थों में ढाले जाते हैं। भाजपा ने इस टिप्पणी को सिख समुदाय से जोड़ते हुए इसे अपमान बताया, जबकि कांग्रेस का पक्ष यह हो सकता है कि यह व्यक्तिगत-राजनीतिक कटाक्ष था, न कि किसी समुदाय पर टिप्पणी। परंतु सार्वजनिक जीवन में धारणा ही कई बार वास्तविकता से अधिक प्रभावशाली हो जाती है। नई दिल्ली में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को सम्बोधित करते हुए भाजपा नेता और केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने कहा था कि राहुल गांधी ने संसद भवन परिसर में भाजपा सांसद सरदार रवनीत सिंह बिट्टू के विरुद्ध अपमानजनक टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि बिना किसी आधार के बिट्टू के विरुद्ध ऐसे शब्द का प्रयोग पूरे सिख समुदाय का अपमान है। उन्होंने दावा किया कि कांग्रेस नेता द्वारा प्रयोग किया गया शब्द देशद्रोह करने वाले व्यक्ति को संदर्भित करता है। इन्होंने आगे कहा कि सिख धर्म के संस्थापक सिद्धांत मानवता, करुणा और मानवीय मूल्यों की रक्षा में दृढ़ता से निहित हैं, जो राष्ट्र को प्रेरित करते रहते हैं।

रवनीत सिंह बिट्टू स्वयं एक सिख नेता हैं और पंजाब की राजनीति में उनकी अपनी पहचान है। ऐसे में उनके प्रति प्रयोग किए गए शब्दों का असर राजनीतिक सीमाओं से बाहर जाकर सामुदायिक संवेदनशीलता को भी छू सकता है। दूसरी ओर, बिट्टू की ओर से आई तीखी प्रतिक्रिया भी यह दर्शाती है कि राजनीतिक विमर्श में संयम तेजी से कम होता जा रहा है।

यह प्रकरण बताता है कि राजनीति में वैचारिक संघर्ष अपनी जगह है, लेकिन भाषा की गरिमा और संवेदनशीलता का ध्यान रखना उतना ही आवश्यक है। विशेषकर तब, जब देश विविध समुदायों, आस्थाओं और ऐतिहासिक भावनाओं से जुड़ा हुआ है। राष्ट्रपति अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव के दौरान प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि सिख समुदाय के प्रति कांग्रेस नेता राहुल गांधी की टिप्पणियों में साफ तौर पर द्वेष झलकता है। संसद परिसर में सांसद रवनीत बिट्टू का अपमान कांग्रेस की असली मानसिकता को दर्शाता है। प्रधान मंत्री मोदी ने कहा कि मोहब्बत की दुकान खोलने का दावा करने वाली कांग्रेस वास्तव में समाज में नफरत फैलाने का काम कर रही है। किसी सिख नेता को गद्दार कहना बेहद दुर्भाग्यपूर्ण और अहंकार का प्रतीक है।

दूसरी ओर कांग्रेस नेताओं का कहना है कि राहुल गांधी का उद्देश्य किसी समुदाय की भावनाओं को ठेस पहुंचाना नहीं था। उनके अनुसार वक्तव्य को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया गया और मूल संदर्भ में उसका अर्थ अलग था। पार्टी प्रवक्ताओं ने स्पष्ट किया कि कांग्रेस का सिख समुदाय के साथ ऐतिहासिक सम्बंध रहा है और पार्टी सभी धर्मों और समुदायों के सम्मान में विश्वास करती है। ऐसा पहली बार नहीं है कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी की ओर से ऐसा वक्तव्य दिया गया है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी के एक हालिया वक्तव्य को लेकर सिख समुदाय के कुछ वर्गों में नाराजगी देखी जा रही है। इस वक्तव्य के बाद राजनीतिक हलकों में भी तीखी बहस शुरू हो गई है। विपक्षी दलों और सिख संगठनों के कुछ प्रतिनिधियों ने इसे सिख भावनाओं के प्रति असंवेदनशील बताते हुए आपत्ति जताई है।

राहुल गांधी के वक्तव्य के कुछ अंश सोशल मीडिया और राजनीतिक मंचों पर तेजी से प्रसारित हुए, जिनकी अलग-अलग व्याख्याएं की जा रही हैं। सिख समुदाय के कुछ लोगों का कहना है कि ऐसे संवेदनशील विषयों पर बोलते समय अधिक सावधानी बरती जानी चाहिए क्योंकि सिख इतिहास और पहचान से जुड़े मुद्दे भावनात्मक रूप से जुड़े होते हैं। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह विवाद ऐसे समय में सामने आया है जब पंजाब और अन्य राज्यों में राजनीतिक गतिविधियां तेज हो रही हैं। सिख मतदाताओं का प्रभाव कई निर्वाचन क्षेत्रों में महत्वपूर्ण है। ऐसे में वक्तव्य के राजनीतिक अर्थ भी निकाले जा रहे हैं। कुछ विशेषज्ञ इसे चुनावी वातावरण में बढ़ती बयानबाजी और उसके प्रभाव के रूप में देख रहे हैं। ●●●

गोविंद गोयल सम्मानित

जालना निवासी गोविंद घनश्यामदास गोयल (कार्यकारी संचालक, कालिका स्टील अलॉयज प्राईवेट लिमिटेड) को 'ग्लोबल यूथ आयकॉन 2026' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। गोविंद घनश्यामदास गोयल को लोकमत द्वारा आयोजित 'वन वर्ल्ड समिट एण्ड अर्वाड्स में भी आमंत्रित किया गया। इसी दौरान उन्हें इजिप्ट (मिस्त्र) 'ग्लोबल आयकॉन अवॉर्ड फॉर इमजिंग एन्ट्रेप्रेन्युअर विथ सोशल इम्पैक्ट' पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

देवगिरी बैंक को 'सर्वश्रेष्ठ बैंक' पुरस्कार मिला

ग्राहक केंद्रित सेवा, नए उपक्रम और विश्वसनीय बैंकिंग प्रणाली के लिए देवगिरी बैंक को आयकॉनिक लीडर्स अवॉर्ड की ओर से 'बेस्ट बैंक ऑफ द इयर' प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके साथ ही बैंक के अध्यक्ष किशोरदादा शितोळे को भी प्रभावी ग्राहक सम्पर्क, नए उपक्रमों के कार्यान्वयन और दूरदर्शी नेतृत्व के लिए 'बेस्ट विजनरी चेयरमैन' पुरस्कार प्रदान किया गया। देवगिरी बैंक की ओर से बैंक की संचालिका मंगलाताई वाहेगावकर, अमिताताई लेकुरवाळे, बैंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्रविण नांदेडकर व उपमुख्य कार्यकारी अधिकारी दत्ता शिंदे ने उक्त पुरस्कार स्वीकार किया। बैंक के अध्यक्ष किशोरदादा शितोळे ने कहा कि यह पुरस्कार संचालक मंडल, अधिकारियों और कर्मचारियों के सामूहिक प्रयासों का परिणाम है

Pitambari Products Pvt. Ltd.: Maharashtra: 8291853804, North: 7011012599,
South: 6366932555, East: 7752023380, 9867102999, CRM: 022 - 67035564 / 5699.
Toll Free: 18001031299. CIN: U52291MH1989PTC051314.

डॉ. राकेश भट्ट

उत्तराखंड में मदरसा बोर्ड की समाप्ति और सभी संस्थानों को विद्यालय शिक्षा बोर्ड से जोड़ने का निर्णय आधुनिक शिक्षा के दृष्टिकोण से मिश्रित, लेकिन सम्भावनाओं से भरा कदम माना जा सकता है। इसका प्रभाव इस बात पर निर्भर करेगा कि इसे किस प्रकार लागू किया जाता है।

मदरसा बोर्ड पर लगा लगाम

उत्तराखंड सरकार ने 1 जुलाई 2026 से राज्य मदरसा बोर्ड को समाप्त कर उसके स्थान पर 'उत्तराखंड राज्य अल्पसंख्यक शिक्षा प्राधिकरण' गठित करने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। अक्टूबर 2025 में राज्यपाल की मंजूरी मिलने के बाद यह निर्णय औपचारिक रूप से लागू होने की प्रक्रिया में है। इस कदम का उद्देश्य शिक्षा प्रणाली में एकरूपता, गुणवत्ता और आधुनिकता को बढ़ावा देना है ताकि सभी छात्र मुख्यधारा की शिक्षा से जुड़ सकें।

नए प्रावधान के अनुसार राज्य के सभी मदरसों को अब उत्तराखंड विद्यालय शिक्षा बोर्ड से मान्यता लेनी होगी। साथ ही 2026-27 शैक्षणिक सत्र से गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान जैसे आधुनिक विषयों को पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से शामिल किया जाएगा। यह परिवर्तन शिक्षा के दायरे को व्यापक बनाने और विद्यार्थियों को प्रतिस्पर्धी युग के अनुरूप तैयार करने की दिशा में एक प्रयास है।

सरकार का तर्क है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल पारम्परिक ज्ञान तक सीमित नहीं होना चाहिए बल्कि छात्रों को समकालीन समाज और रोजगार की आवश्यकताओं के अनुरूप भी सक्षम बनाना चाहिए। विज्ञान और गणित जैसे विषय विद्यार्थियों की तार्किक क्षमता और विश्लेषणात्मक सोच को विकसित करते हैं, जबकि सामाजिक विज्ञान उन्हें समाज, संविधान और नागरिक कर्तव्यों की समझ प्रदान करता है। ऐसे में पाठ्यक्रम का आधुनिकीकरण विद्यार्थियों के समग्र विकास में सहायक हो सकता है। यह भी उल्लेखनीय है कि यह निर्णय केवल मुस्लिम मदरसों तक सीमित नहीं है बल्कि राज्य के सभी अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थानों- मुस्लिम, सिख, जैन, बौद्ध, ईसाई और पारसी पर समान रूप से लागू होगा। इससे शिक्षा के क्षेत्र में समान मानकों और पारदर्शिता की स्थापना का प्रयास दिखाई देता है। समान नियमों के अंतर्गत संचालित संस्थान विद्यार्थियों के लिए उच्च शिक्षा और रोजगार के अवसरों को अधिक सुलभ बना सकते हैं।

हालांकि किसी भी शैक्षणिक ढांचे में परिवर्तन स्वाभाविक रूप से चुनौतियां लेकर आता है। पारम्परिक संस्थानों के लिए नए पाठ्यक्रम और मानकों के अनुरूप ढलना समय और संसाधनों की मांग कर सकता है। इसलिए आवश्यक है कि सरकार संक्रमण काल में आवश्यक मार्गदर्शन, प्रशिक्षण और आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध कराए ताकि यह बदलाव सहज और प्रभावी ढंग से लागू हो सके।

समग्र रूप से देखा जाए तो यह निर्णय शिक्षा सुधार की व्यापक प्रक्रिया का हिस्सा प्रतीत होता है। यदि इसे संतुलित, संवादात्मक और सहयोगात्मक तरीके से लागू किया गया तो यह कदम राज्य के विद्यार्थियों को आधुनिक ज्ञान, कौशल और अवसरों से जोड़ने में सहायक सिद्ध हो सकता है। शिक्षा समाज के निर्माण का आधार है और उसका उद्देश्य सभी वर्गों को समान अवसर प्रदान करना होना चाहिए। उत्तराखंड सरकार का यह निर्णय इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में देखा जा सकता है। यह कदम आधुनिक शिक्षा की दिशा में सकारात्मक सिद्ध हो सकता है, बशर्ते इसे संवेदनशीलता, समावेशिता और पर्याप्त संसाधनों के साथ लागू किया जाए। शिक्षा का उद्देश्य किसी भी समुदाय की पहचान को कमजोर करना नहीं बल्कि विद्यार्थियों को व्यापक अवसरों से जोड़ना होना चाहिए। यदि यही संतुलन बना रहा तो यह निर्णय राज्य के शिक्षा परिदृश्य को सशक्त बना सकता है। ●●●

सतीश सिंह

क्रिप्टोकरेंसी एक डिजिटल मुद्रा है, जो सुरक्षित लेनदेन के लिए क्रिप्टोग्राफी और ब्लॉकचेन तकनीक का उपयोग करती है। यह पूरी तरह से ऑनलाइन होती है और यह नोटों या सिक्कों की तरह भौतिक रूप में नहीं होती।

क्रिप्टोकरेंसी की बढ़ती लोकप्रियता

क्रिप्टोकरेंसी एक डिजिटल मुद्रा है, जो पारम्परिक सिक्कों, रुपए, डॉलर जैसी भौतिक मुद्राओं से अलग है और इसे सरकार या केंद्रीय बैंक द्वारा जारी नहीं किया जाता है। इसलिए इसका कोई नियामक भी नहीं है। यह ब्लॉकचेन और क्रिप्टोग्राफी तकनीक पर आधारित है, जिससे लेनदेन पूरी तरह सुरक्षित रहता है। बिटकॉइन सबसे प्रसिद्ध क्रिप्टोकरेंसी है, पर इथेरियम, टीथर, लाइटकॉइन, डोजकॉइन आदि का भी व्यापक उपयोग होता है।

वजीर एक्स, कॉइन डीएक्स जैसी क्रिप्टो एक्सचेंज के माध्यम से निवेशक रुपए, डॉलर आदि मुद्राओं में से क्रिप्टो में निवेश कर सकते हैं। यह पीयर-टू-पीयर नेटवर्क पर आधारित है, जो व्यक्तियों के बीच बिना बिचौलिए के डिजिटल लेनदेन की अनुमति देता है। शुरुआत में इसका प्रयोग जुआ और सट्टेबाजी में होता था, लेकिन अब यह वस्तुओं और सेवाओं की खरीद-बिक्री के लिए भी प्रयोग हो रहा है। इसकी कीमतें अत्यंत तेजी से बढ़ या घट सकती हैं। इसलिए इसमें निवेश जोखिम से भरपूर है और इसे शेयर बाजार जैसी तुलना नहीं की जा सकती।

यद्यपि शुरुआती चुनौतियां थीं, फिर भी 2025 तक बहुत से विदेशी बाजारों में क्रिप्टोकरेंसी को मुख्यधारा में ले आया गया है और भारत जैसे विकासशील देशों में इसकी लोकप्रियता भी बढ़ रही है। अब तो जेपी मॉर्गन, सिटी जैसे बड़े बैंक भी ब्लॉकचेन-आधारित समाधानों और स्टेबलकॉइन को अपना रहे हैं। पर्यटन क्षेत्र में भी क्रिप्टो लेनदेन में तेजी आई है। इन बदलावों के कारण अक्टूबर 2025 तक विश्व क्रिप्टो बाजार का कुल मूल्य 4,35,000 करोड़ रुपए से पार कर गया है।

अमेरिका और यूके ने क्रिप्टोकरेंसी के नियंत्रण के लिए कई नियम बनाए हैं। यूरोप में भी क्रिप्टो के लिए नियम लागू किए गए हैं। इसके बाद भी वहां क्रिप्टो लेनदेन में 50% से अधिक की वृद्धि दर्ज हुई है। वहीं, एल साल्वाडोर ने बिटकॉइन को अपनी कानूनी मुद्रा घोषित किया है। हालांकि चीन और सऊदी अरब जैसे देशों ने बिटकॉइन पर प्रतिबंध लगा दिए हैं।

भारत में क्रिप्टोकरेंसी को वैध मुद्रा नहीं माना जाता, लेकिन इसका लेनदेन कानूनी है। यहां आप क्रिप्टो खरीद और बिक्री कर सकते हैं। सरकार इन लेनदेन से होने वाले मुनाफे पर 30% का कर, सरचार्ज, 4% सेस और 1% टीडीएस लगाती है। हालांकि क्रिप्टो से जुड़े अभी तक कोई कानूनी नियम नहीं बनाए गए हैं। वर्तमान में सरकार और रिजर्व बैंक इस दिशा में काम कर रहे हैं और केंद्रीय बैंक जनता को इन जोखिमों से अवगत करा रहा है।

क्रिप्टोकरेंसी के स्वीकृति में वृद्धि के कारण वित्त वर्ष 2025-26 तक इसके निवेशकों की संख्या 10 करोड़ से अधिक हो सकती है। अब इसके निवेशक महानगरों से बाहर आकर टियर-2 और टियर-3 शहरों में पहुंच चुके हैं। इसके अलावा लोग सोने, चांदी और शेयर बाजार की तुलना में अधिक लाभ के लिए क्रिप्टो में निवेश कर रहे हैं।

अंत में इसकी बढ़ती स्वीकार्यता के कारण अब विश्व के किसी भी देश के लिए क्रिप्टोकरेंसी को नकारना सम्भव नहीं है क्योंकि यह मुद्रास्फीति से प्रभावित नहीं होती और इसके लेनदेन में धोखाधड़ी का संकट कम है, इसलिए भारत में भी इसकी निवेशकों की संख्या आने वाले समय में और बढ़ने की आशंका है। फिर भी इसे अर्थव्यवस्था से जोड़ना, सम्बंधित चुनौतियों का समाधान करना और एक मजबूत नियामक ढांचा विकसित करना आवश्यक है, तभी अधिकतर देश इसे जल्दी से जल्दी कानूनी मुद्रा के रूप में स्वीकार करेंगे। ●●●

विनोद अनुपम

'घूसखोर पंडत' और 'मर्दानी 3' फिल्म के हिडन एजेंडे को लेकर विवाद बढ़ता ही जा रहा है। उक्त दोनों फिल्म सामाजिक विमर्श के विषय बन गए हैं। देशभर में लम्बे समय तक चले 'बायकॉट बॉलिवुड' अभियान के बाद भी बॉलिवुड सुधरने का नाम नही ले रहा है।

यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं, अराजकता है

नाम में क्या रखा है, सुनने में अवश्य अच्छा लगता है, लेकिन जहां नाम से ही पहचान बन रही हो, वहां कोई नाम अकारण रखा गया हो, मानना कठिन हो जाता है। नीरज पांडे जैसे फिल्मकार जिन्होंने अपनी फिल्मों के 'ए वेडनेसडे', 'स्पेशल 26', 'बेबी' जैसे अमूर्त टाइटिल रखे हों, वे 'घूसखोर पंडत' जैसे सपाट नाम का चयन करें तो नीयत पर शंका उठना स्वभाविक है। फिल्म जैसी विधा में अकारण कुछ होता भी नहीं। अब नीरज पांडे सफाई देते हुए कह रहे हैं कि पात्र का नाम अजय दीक्षित है, जो दिल्ली पुलिस का घूसखोर अधिकारी है, इसीलिए फिल्म का नाम घूसखोर पंडित रखा गया। भाई मेरे, तो फिल्म का नाम घूसखोर दीक्षित रखते न, एक किसी दीक्षित के कारण आप पूरे समाज पर कैसे उंगली उठा सकते हैं। भारत में दो चार आतंकवादियों के नाम याद कीजिए, कोई न कोई शेख, रहमान, अब्दुल ही होगा, क्या नीरज पांडे कभी सोच सकते कि वे 'आतंकवादी मुसलमान' टाइटिल से कोई फिल्म बना सकते हैं? नाम के प्रति नीरज कितनी सावधानी बरतते ही, यह उनकी हाल ही में आई वेबसीरिज तस्करी में भी देखी जा सकती है, यहां जुझारु ईमानदार अधिकारी का किरदार निभा रहे इमरान हाशमी राजेश मीणा हैं, वे राजेश दीक्षित भी तो हो सकते थे। तस्करी के अंतरराष्ट्रीय सरगना बने शरद केलकर राजीव चौधरी यानी बड़ा चौधरी का किरदार निभाते हैं, कोई नहीं पूछता चौधरी ही क्यों, चौधरी के सरनेम से उन्होंने कितने सरगनाओं को देखा है, जिसका अनेक देश में साम्राज्य फैला हो। वास्तव में जिनका फैला है, उनके नाम लिखने का साहस नहीं तो आसान टार्गेट चौधरी ही सही। प्रश्न है केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड के लिए जब स्पष्ट दिशा निर्देश बने हैं कि वह सामाजिक वैमनस्य फैलाने वाले किसी विषय, दृश्य या संवाद के उपयोग की फिल्म में अनुमति नहीं दे सकता, फिर कौन सी अस्पष्टता की आड़ में आमतौर पर ऐसे दृश्य हमारे सामने होते हैं? उल्लेखनीय है कि यह प्रावधान उसी मजबूती से विज्ञापन सामग्रियों पर भी लागू होता है। अभी दिल्ली को जिस तरह मर्दानी 3 के लिए दिल्ली में अपहरण के मुद्दों को पब्लिसिटी स्टंट बनाकर भयभीत करने का प्रयास किया गया, उसे एक सुनियोजित अपराध ही माना जा सकता है। सीबीएफसी जैसी संवैधानिक संस्था की यहां पर चुप्पी हतप्रभ करती है। 'घूसखोर पंडत' चूंकि विशेषतौर पर ओटीटी के लिए बनाई गई थी। यह माना जा सकता है सीबीएफसी की उसमें कोई भूमिका नहीं, लेकिन यहीं पर प्रश्न है आखिर ओटीटी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर कब तक अराजकता को बढ़ावा देते रहेगी? उदारता के साथ केंद्र सरकार ने कुछ वर्ष पहले ओटीटी के लिए स्वनियमन की व्यवस्था दी थी, लेकिन यह इतना अपूर्ण था कि बीते साल अश्लीलता के आरोप में केंद्र सरकार को कई ओटीटी प्लेटफार्म पर प्रतिबंध लगाने पड़े। सेक्स, हिंसा, सामाजिक वैमनस्यता और भारतीय संस्कृति का उपहास भारतीय ओटीटी की आज भी पहचान बनी है, जिसकी एक झलक 'घूसखोर पंडत' के रूप में मिलती है।

अब नीरज पांडे कह रहे हैं कि उन्होंने अनेक प्रचार सामग्री हटा ली और फिल्म नए टाइटिल के साथ रिलीज की जाएगी। उच्च न्यायालय ने हालांकि इसी के साथ इस विमर्श को विराम दे दिया है, लेकिन प्रश्न है टाइटिल बदल देने से क्या बदल जाएगा? पूरी फिल्म में पंडित घूसखोर दिखेगा, लेकिन टाइटिल कुछ और हो जाएगा, क्या यही हम चाहते थे? प्रश्न है ऐसे वैमनस्यता वाले कंटेट से हिंदी सिनेमा कब परहेज करने को तैयार होगी। •••

डॉ. अशोक व्यास

एक थीं वकील साहिबा

एक थीं वकील साहिबा जो हमेशा सारे तर्क-कुतर्क के साथ अपनी गली में खुद को शेरनी समझती थीं। वह कानून की धाराओं से नहीं धारा प्रवाह बोलकर अपनी गली में अच्छे अच्छों की बोलती बंद कर देती थीं। अपने मोहल्ले अपनी गली में जब बार बार जीतने लगीं तब उसे वह मोहल्ला, वह गली छोटी लगने लगी उसके सहायकों ने उसके भ्रम को बनाए रखने हेतु वकील साहिबा में फूंक भरने लगे, जिससे वह और भी फूं-फां करने लगीं। अब उसको अपने आप को राष्ट्रीय स्तर पर सिद्ध करने के लिए एक मौका चाहिए जो उसे सर ने प्रदान कर दिया। वकील साहिबा जिसने केस गली मोहल्ले में लड़े थे, कभी काला कोट नहीं पहना था, भले ही योग्यता काला कोट पहनने की थी, लेकिन मोहल्ले में सफेद कोट से काम चला लेती थीं। वैसे भी उनका मानना था कि वे सभी कानूनों, परम्पराओं और मर्यादाओं से ऊपर हैं। वह कोई भी केस मां, माटी और मानुस के नाम से लड़ती थीं और जीतती थीं। यदि जीतने में कोई समस्या पैदा करे तो उसे ठोक-पीट कर ठीक कर देती थीं और तो और केस जीतने के बाद भी उसके सहायक सामने वाली पार्टी को उसी कानून, उसी धाराओं और तरीकों से ठीक करते थे, जैसा तरीका वकील साहिबा अपनाती थीं, लेकिन इस बार सर ने मामला उलझा दिया था। मोहल्ले के स्टेज पर उसके सहायकों ने आउट सोर्स की सहायता से स्टेज पर लगे कोर्ट को अपने मन माफिक निर्णय देने के लिए मजबूर करने का उपाय किया, लेकिन सर ने सबसे बड़े कोर्ट में मुकदमा दायर कर दिया। वकील साहिबा का मन तो नहीं था कि जब सफेद कोट से काम चल सकता है तो काला कोट क्यों पहनूं, परंतु उनके वरिष्ठ साहयकों ने समझाया कि इससे आपकी इमेज राष्ट्रीय स्तर की बनेगी, आप दूसरों के मुकदमे आसानी से लड़ सकेंगी और फिर आपको कौन हरा सकता है। वकील साहिबा को लगा आज काला कोट पहनने का मौका भी है, दस्तूर भी है और कामना पूरी करने का अवसर भी है। वकील साहिबा ने काला कोट पहना और पूरे गाजे-बाजे, लाव-लश्कर के साथ सबसे बड़े कोर्ट में मीडिया को साक्ष्य बना कर प्रवेश कर गईं। वकील साहिबा इस बार गलती कर गईं। बड़े कोर्ट की लड़ाई को गली की लड़ाई समझ लिया। सुजलाम-सुफलाम वाली धरती पर बाउंसर पर बाउंसर फेंक कर या अपने कार्यकर्ताओं को बाउंसर बनाकर विरोधियों पर आक्रमण वह कर सकती हैं, छोटे कोर्ट को हाईजैक कर सकती हैं। इसी प्रकार वह मानती थीं कि बड़े कोर्ट की पिच पर भी खेला जा सकता है क्योंकि उनके कार्यकर्ता यह मानते हैं कि वकील साहिबा की महिमा होम ग्राउंड तक सीमित नहीं है, उसे अंतरराष्ट्रीय स्तर तक की होना है। उनका मानना है कि वकील साहिबा देखने की ही नहीं, सुनने की भी चीज है। यही संदेश वह अपने समर्थकों को देना चाहती हैं। उन्होंने जब अपनी वकालत शुरू की थी तब वह सिर्फ मां, माटी और मनुष्य के केस लड़ती थीं, जो आज बदलकर मैं, मेरे मुवक्कील और मेरे सहायकों तक हो गई है।

इसके निहितार्थों की बात करें तो पहला संदेश है बड़े कोर्ट में मैं खुद आ रही हूं, यह कदम बताता है कि केवल मुवक्कील की फाइलों पर हस्ताक्षर करने वाली नहीं बल्कि बड़े कोर्ट के मैदान में उतरने वाली योद्धा भी हैं। वकील साहिबा को यदि बड़े कोर्ट में आने पर मजबूर होना पड़े तो समझो संदेश साफ है मामला गम्भीर है। अब आप पूछेंगे कि बड़े कोर्ट में क्या हुआ तो साहब बड़े कोर्ट में वकील साहिबा तर्क रखने लगीं तब कोर्ट ने कहा आप गवाही तो दे सकती हैं, लेकिन वकालत करने के लिए आपके पास सनद होना आवश्यक है ताकि सनद रहे। वकील साहिबा हक्की-बक्की रह गईं क्योंकि उनके पास सनद थी ही नहीं, होम ग्राउंड पर सनद की उन्हें आवश्यकता नहीं थी, यहां आवश्यकता पड़ गई। बड़े कोर्ट ने कानून के अनुसार निर्णय सुनाया उन्हें कोई राहत नहीं दी। वकील साहिबा- सर, सर, सर... कहती रह गईं।

●●●

दिव्यांग कल्याणकारी संस्था का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिव्यांग कल्याणकारी संस्था का वार्षिक उत्सव तथा विश्व दिव्यांग दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां अत्यंत सुंदर ढंग से प्रस्तुत कीं। पहली से चौथी कक्षा के विद्यार्थियों ने किसान नृत्य प्रस्तुत किया, वहीं बड़े विद्यार्थियों ने भगवान श्रीराम पर आधारित गीत पर आकर्षक नृत्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के प्रमुख अतिथि मेजर जनरल विनय हंडा तथा कार्यक्रम के अध्यक्ष पर्वती क्षेत्र के मा. संघचालक एडवोकेट चंद्रशेखर कुलकर्णी उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरुआत संगठन मंत्र से हुई। संस्था की छात्राओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। इसके बाद विद्यार्थियों ने विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस अवसर पर दिव्यांग क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वालों को दिव्यांग कल्याणकारी सेवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कोथरुड स्थित अबनॉर्मल संस्था को उसके उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित किया गया। संस्था की संचालिका किशोरी पाठक ने पुरस्कार स्वीकार किया। संस्था के पूर्व विद्यार्थी श्री दत्ता लखे को मुख्याध्यापक पद पर नियुक्ति मिलने पर विशेष रूप से सम्मानित किया गया। दिव्यांग कल्याणकारी सेवा पुरस्कार रेश्मा भारत पायाळ को प्रदान किया गया। संस्था के विद्यालय के मेधावी छात्र यश घनवट तथा छात्रा हर्षदा मोरे को गुणवंत विद्यार्थी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का प्रास्ताविक संस्था के कार्याध्यक्ष एडवोकेट मुरलीधर कचरे ने रखा। अतिथियों का परिचय संस्था के उपकार्याध्यक्ष डॉ. सतीश जैन ने कराया। आभार प्रदर्शन संस्था के सहसचिव राहुल बनकर ने किया। कार्यक्रम में संस्था के सचिव शंकर जाधव, विश्वस्त राजाभाऊ कदम, सह-कोषाध्यक्ष मारुति राऊत, विश्वस्त किशोर रासकर, सक्षम के पश्चिम महाराष्ट्र प्रांत के सहसचिव गहिनीनाथ नलावडे, पुणे जिला सक्षम के अध्यक्ष शिवाजीराव भेगडे, सक्षम पुणे महानगर के सचिव अशोक जवेरी, विद्यार्थियों के अभिभावक, आमंत्रित अतिथि, शिक्षकगण एवं कर्मचारी उपस्थित थे। कार्यक्रम की सफलता हेतु मुख्याध्यापिका शिवानी सुतार, अधीक्षक धनश्री बेके तथा सभी शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने विशेष प्रयास किए। कार्यक्रम का समापन कल्याण मंत्र के साथ हुआ।

हिंदी विवेक के कार्यालय में आज दि। 12 फरवरी को शाम 4:30 बजे हरिद्वार के श्री पंचरक्षा नाम जूना आखाड़ा के महामंडलेश्वर डॉक्टर स्वामी वीरेंद्र गिरी जी महाराज का शुभ आगमन हुआ। आध्यात्मिक साधना, राष्ट्र एवं समाज हित की सेवा तथा सनातन धर्म के प्रति अखंड समर्पण के लिए विख्यात स्वामी जी युवा संतों में एक विलक्षण नेतृत्वकर्ता, विद्वान एवं तपस्वी साधक के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उनके साथ दिल्ली निवासी दिलीप जैन और परेश शाह भी उपस्थित थे। इस शुभ अवसर पर हिंदी विवेक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अमोल पेडणेकर और कार्यकारी सम्पादक पल्लवी अनवेकर ने उन्हें पुष्पगुच्छ देकर उनका स्वागत व आदर सत्कार किया।

इस दौरान हिंदी विवेक द्वारा प्रकाशित 'मंदिर: राष्ट्र के ऊर्जा केंद्र', 'सनातन भारत', 'दीपस्तम्भ' ग्रंथ एवं 'हम संघ में क्यों है' पुस्तक के साथ ही हिंदी विवेक के फरवरी माह का नियमित अंक उन्हें प्रदान किया। इसके बाद हिंदी विवेक की पूरी टीम को भी महाराज जी के दर्शन, मार्गदर्शन और संवाद का लाभ मिला।

अपने आशीर्वचन में महाराज जी ने कहा कि आज की युवा पीढ़ी अर्थात जेन जी को चिंता नहीं, चिंतन करने की आवश्यकता है। सोशल मीडिया पर स्क्रोल करने से अच्छा है कि हम अपने समय का सदुपयोग करते हुए पुस्तक रूपी ज्ञान से अपनी चेतना को जगाए और विवेकवान बने। हिंदी विवेक के अंक, विशेषांक, ग्रंथ, पुस्तक के कंटेंट पाठकों को जागरूक बनाते हैं। इसके अलावा उन्होंने संघ की ऐतिहासिक शताब्दी यात्रा, वंदेमातरम् राष्ट्रगीत, राष्ट्रभक्ति से जुड़े विषयों पर प्रकाश डालते हुए राष्ट्र धर्म का बोध कराया। अंत में उन्होंने हिंदी विवेक के सभी कर्मचारियों को अपना आशीर्वाद प्रदान कर कृतार्थ किया।

TJSB SAHAKARI BANK LTD.
MULTI-STATE SCHEDULED BANK
Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank
With low-interest rates and flexible terms, cruise in style while reducing your carbon footprint
Green Car Loan starting at
8.00%* p.a.
*T&C apply
www.tjsb.bank.in | : -022-48897204